



Maratha Vidya Prasarak Samaj's
ARTS AND COMMERCE COLLEGE, SOYGAON

Tal: Malegaon Dist: Nashik, Pincode: 423203



Affiliated to Savitribai Phule Pune University (ID No. PU/NS/AC/75/2003)

Contact No. : (02554)250505

AISHE Code: C-41366

College Code: 0733

E-mail: srcollege.soygaon@mvp.edu.in

Website: www.mvpsoygaoncollege.ac.in

3.3.2. Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years

UGC Non CARE List

Title of paper	Name of the author/s	Department of the teacher	Name of journal	Year of publication	ISSN number	Page No
Books						
Manav Jivan Aur Korona	M.B.Kale	Hindi	J.T.S.Publication Delhi	2021	ISBN-978-93-92611-48-3	
Paryavaran Bhugol	Dr.B.M.Ahire	Geography	Himalaya Publishing	2020		
Research Papers						
Nashik Jilhyatil Madhyam Jalsinchan Prkalpacha Adhava	Dr.B.M.Ahire	Geography	B.Adhar	2022	ISSN-2278-9308	
Hidi Bhasha Anuvad Me Rojgar ke Avsar	M.B.Kale	Hindi	Ayudh	2020	ISSN-2321-2160	
Doklam Samshya Ani Bharat Chin-Sabhandh	P.D.Gonarkar	Political Science	Vidyawarta	2019	ISSN-2319-9318	
Smart City Concept and Challenges in India	N.B.Nerkar	Geography	EIIR	2019	ISSN 2277-8721	
Role Of Industrial Development in Economic Growth	Dr.M.V.Jagtap DR.P.T.Nikam	Economics	Vidyawarta	2019	ISSN-2319-9318	
Bharat Chin Sabandh	Dr.M.V.Jagtap DR.P.T.Nikam	Economics	Vidyawarta	2019	ISSN-2319-9318	



PRINCIPAL
Arts & Commerce College
Soygaon, Tal. Malegaon



Maratha Vidya Prasarak Samaj's
ARTS AND COMMERCE COLLEGE, SOYGAON

Tal: Malegaon Dist: Nashik, Pincode: 423203



Affiliated to Savitribai Phule Pune University (ID No. PU/NS/AC/75/2003)

Contact No. : (02554)250505

AISHE Code: C-41366

College Code: 0733

E-mail: srcollege.soygaon@mvp.edu.in

Website: www.mvpsoygaoncollege.ac.in

3.3.2.1. Total number of books and chapters in edited volumes/books published and papers in national/ international conference proceedings year wise during last five years

Year	2021-22	2020-21	2019 – 20	2018-19	2017-18
Number	01	01	02	04	00




PRINCIPAL
Arts & Commerce College
Soygaon, Tal. Malegaon

मानव-जीवन और कोरोना (बौद्धिक संदर्भ में)



डॉ. घनश्याम भारती
डॉ. ओकेन्द्र

मानव-जीवन और कोरोना (बौद्धिक संदर्भ में)

सम्पादक

डॉ. घनश्याम भारती
डॉ. ओकेन्द्र



जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
बी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com



जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

मानव-जीवन और कोरोना(बौद्धिक संदर्भ में)
सम्पादक

डॉ० घनश्याम भारती, डॉ० ओकेन्द्र

पीयर रिव्यू टीम

डॉ० दीपक पाण्डेय, सहायक निदेशक, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली
आचार्य पं० पृथ्वीनाथ पाण्डेय, भाषाविद्-समीक्षक-मीडिया अध्ययन-विशेषज्ञ, प्रयागराज
डॉ० डी० आर० राहुल, प्राचार्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया, मध्यप्रदेश
डॉ० शिव प्रसाद शुक्ल, प्रोफेसर हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२१

ISBN 978-93-92611-48-3

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरुण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Manav -Jivan aur Corona (Bodhik Sandarbh Main)

Edited by Dr. Ghanshyam Bharti, Dr. Okendra

प्राक्कथन

भीषण आपदा है महामारी कोरोना

“मानव-जीवन और कोरोना” (बौद्धिक संदर्भ में) नामक पुस्तक का प्रकाशन महामारी कोरोना के मानव जीवन पर प्रभाव के संदर्भ में किया गया है। कोरोना ने आज सम्पूर्ण विश्व की मानवता को प्रभावित किया है, मानवता आज अपने अस्तित्व को बचाये रखने का युद्ध लड़ रही है, यह युद्ध है एक अदृश्य शत्रु के विरुद्ध, जिसे नग्न आँखों से देख पाना नामुमकिन है। जी हाँ! इस अदृश्य शत्रु का नाम है वूहान चीनी वायरस ‘कोरोना’! हम संदर्भित पुस्तक के माध्यम से 21वीं शताब्दी की भीषण आपदा ‘महामारी कोरोना’ को साहित्य के माध्यम से समायोजित कर कोरोना के प्रभाव से विविध पक्षों शैक्षिक, साहित्यिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और मानवीय विविध पक्षों पर पड़े प्रभाव को उजागर किया है इस पुस्तक में वर्णन है महामारी ‘कोरोना’ का जिसमें मनुष्य इस अदृश्य विषाणु के प्रभाव में आकर बेबस, लाचार और विवशतापूर्ण ‘मानवीय-संघर्ष’ कर रहा है।

मनुष्य की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है विस्मृति ‘भूलना’! मनुष्य हर गुजरे वक्त के साथ वर्तमान में घटी घटनाओं को भविष्य में भूल जाता है यह मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। महामारी ‘कोरोना’ ने वर्तमान में हमें इतने जख्म दिये हैं न जाने कितनी ही अमानवीय घटनाओं के दृश्य हमने और आपने साक्षात् देखे हैं, कि शायद इन घटनाओं को भविष्य में भूल पाना सम्भव नहीं होगा। सम्पादक इस पुस्तक के माध्यम से ‘कोरोना-काल’ में घटी विभिन्न प्रभावकारी घटनाओं को संयोजित करने का प्रयास किया है जिससे हमारा समाज इसका दर्शन कर सके और समुचित लाभ उठा सके तथा सामाजिक जीवन में सदैव सचेत, सतर्क और संयमित रहे।

आधुनिक भौतिक युग में मानव ने अपने विकास और प्रगति की विकासगाथा स्वयं अपने हाथों से लिखी है। आज हम विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी, चिकित्सा विज्ञान, सुदूर संचार एवं उपग्रह तकनीकी

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन : डॉ० घनश्याम भारती, डॉ० ओकेन्द्र	५
भूमिका : डॉ० घनश्याम भारती, डॉ० ओकेन्द्र	६
१. महामारी 'कोरोना' का शिक्षा पर प्रभाव डॉ० घनश्याम भारती, पूजा शर्मा	१७
२. महामारी कोरोना का समग्र प्रभाव : शैक्षिक संदर्भ में डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० (सुश्री) राणी बापू लोखंडे	२२
३. कोरोना काल में मानवीय संघर्ष डॉ० सत्य प्रकाश	४२
४. कोविड-१९ और मनोस्वास्थ्य डॉ० वेदप्रकाश	४८
५. COVID-19 & Online Education Dr. Alok Kumar Singh	५६
६. Corona Corroding Employment and Creating Challenges against Livelihood in India Dr. Vinod Kumar Yadav	६६
७. मानवीय संवेदना पर महामारी 'कोरोना' का प्रभाव डॉ० यशवन्त यादव	८२
८. महामारी और उपन्यास डॉ० अरुण प्रसाद रजक	९१
९. कोविड-१९ के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा व्यवस्था : एक विवेचन डॉ० मोनिका मित्तल	१००
१०. कोरोना महामारी का शिक्षा पर प्रभाव डॉ० रेणु कुमारी	१०७
११. कोविड-१९ का उच्च शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में ऑनलाइन शिक्षा की जरूरत और चुनौतियाँ डॉ० दीप्ति अग्रवाल	११२
१२. कोरोना काल में मानव जीवन शैली में आए बदलाव डॉ० संगीता	१२३
१३. साहित्य और कोरोना रेशमा शेख	१२६

१४. कोरोना महामारी का पर्यटन और पर्यटन उद्योगों पर प्रभाव (उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में) डॉ० हर्षी खण्डूड़ी	१३५
१५. प्रलयकारी कोरोना और मानव जीवन : एक अवलोकन संतोष कुमार	१४८
१६. उत्तर कोरोना काल (भाषा, साहित्य और संस्कृति के विशेष संदर्भ में) ममता माली	१५५
१७. दुर्गम क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षा पर पड़ा कोरोना का प्रभाव डॉ० मंजूलता यादव	१५६
१८. कोरोना और ऑनलाइन शिक्षा डॉ० वन्दना खरे	१६६
१९. कोरोना और ऑनलाइन शिक्षण डॉ० अनिल कुमार जैन, योगिता व्यास	१७७
२०. कोरोना का मानव जीवन पर प्रभाव डॉ० ललित कुमार	१८८
२१. कोविड-१९ अवधि के दौरान भारतीय रोजगार क्षेत्र की चुनौतियाँ और समाधान प्रा. डॉ० जयश्री पुरुषोत्तम सरोदे	१९०
२२. 'कोरोना' का मानव जीवन पर प्रभाव प्रा. मिनाक्षी बबनराव काळे	१९८
२३. कोरोना का मानव जीवन पर प्रभाव रेशमा शेख	२०३
२४. कोरोना का शिक्षा पर प्रभाव डॉ० रविता सिंह	२०६
२५. कोरोना का प्रकृति और पर्यावरण पर प्रभाव डॉ० अर्चना	२१७
२६. कोरोना का मानव जीवन पर प्रभाव डॉ० ओमना सेनानी	२२३
२७. कोविड-१९ और अर्थव्यवस्था मनीषा शर्मा	२३३
२८. कोरोना का शिक्षा पर प्रभाव	

(म.प्र. में ग्वालियर जिले के विशेष सन्दर्भ में) दीप्ती कुशवाह	२४१
२६. कोरोना का शिक्षा एवं रोजगार पर प्रभाव नुसरत	२४८
३०. महामारी कोरोना और वर्तमान परिदृश्य कृष्णा पराते	२५६
३१. कोरोना वायरस : एक वैश्विक महामारी प्रा. विजय डी. वाकोडे	२६१
३२. मानव स्वास्थ्य पर कोरोना का प्रभाव सुदीप्त कुमार करण	२६७
३३. कोविड-१९ से मुकाबला डॉ० कादम्बिनी मिश्र	२७२
३४. कोरोना महामारी का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव डॉ० गीता	२७८
३५. कोरोना वायरस : एक रहस्य डॉ० श्रद्धा हिरकने, शाहिद हुसैन	२८६

‘कोरोना’ का मानव जीवन पर प्रभाव

प्रा. मिनाक्षी बबनराव काळे

एम.ए. बी.एड. नेट, सेट (हिंदी)

कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय सोयगांव, ता. मालेगांव जि.नाशिक

ई-मेल : meenakshi.b.kale@gmail.com

मोबाइल : 8999486073

सारांश :

कोरोना महामारी एक वास्तविक और विराट महाप्रकोप है। इस महामारी का मानव जीवन पर बहुत ही बुरा असर पड़ा है इससे पहले कभी ऐसी महामारी का आगमन नहीं हुआ था। यह एक संक्रामक बीमारी है। मानव जीवन अधिक से अधिक त्रस्त हुआ है, पूरे विश्व में हाहाकार मचा हुआ है। इस बीमारी के कारण लोगों के मन में मृत्यु का भय उत्पन्न हुआ है। मृत्यु का अकांड तांडव देख कर भय के वातावरण का निर्माण हुआ है। देश की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई है। मनुष्य के रोजमर्रा जीवन में बदलाव आये हैं! सामाजिक आर्थिक परिदृश्य में बदलाव किए गए हैं। सड़कें सूनी हैं कार्यालय, स्कूल, कॉलेज सभी खाली हैं सभी लोग अपने घरों में बंद हैं। इस आपदा के कारण अभूतपूर्व संकट उत्पन्न हुआ है। भारत के सभी डॉक्टर नर्स पुलिस कर्मी लोगों की सेवा कर रहे हैं। खुद की चिंता न कर के लोगों की दिन रात सेवा कर रहे हैं। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने आत्मनिर्भर भारत का आवाहन किया है। लॉकडाऊन के कारण जीवन की गति मानो जैसे शिथिल हो गई थी लेकिन लंबे समय तक अवरोध जीवन मानव को स्वीकार नहीं है। इसलिए मनुष्य ने इस पर उपाय ढूँड निकाले हैं। ऑनलाइन शिक्षा, होम डिलिवरी, वर्क फ्रॉम होम सामाजिक दूरी का पालन मास्क पहनना इन सभी उपायों के साथ मनुष्य ने अपना जीवन जीना आरंभ किया। अनलॉक करने के बाद लोगों को महामारी की स्थिति का सामना करने के लिए स्वयं को तैयार

एवं जागरुक रहना होगा। इस बदलते परिवेश के संग ही जीवन में नए रंग भरने के लिए कार्य करने होंगे। कोरोना महामारी के कारण जो नए बदलाव किए गए उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में विश्व का कल्याण निहित है।

प्रस्तावना :

कोविड-19 की शुरुआत चीन के वुहान शहर में दिसम्बर 2019 में हुई थी। यह एक संक्रामक बीमारी है। मानव जीवन भौतिक, आर्थिक, सामाजिक और मानसिक चोट खा रहा है। कोरोना महामारी एक विराट महाप्रकोप है। 'न भूतो न भविष्यति'। ऐसी महामारी कभी किसी ने भी भूतकाल में नहीं देखी थी और न कभी भविष्य में देखेंगे इसका अनुमान नहीं लगा सकते! इसके लक्षण- बुखार, खाँसी, साँस लेने में तकलीफ मुँह का स्वाद निकल जाना, अस्वस्थ लगना। व्यक्ति को जब न्यूमोनिया होने पर जब कोरोना संक्रमण बढ़ गया तो व्यक्ति की मौत हो जाती है। कोविड-19 का समय व्यक्ति की मानवता की परीक्षा का समय है। मनुष्य ही मनुष्य की दवा होती है! इस लोकोक्ति के अनुसार लोगों को एक दूसरे की सहायता की आवश्यकता है। इस महामारी के दौरान मनुष्य! ने ही मनुष्य! की सहायता की। हमारे भारत देश के डॉक्टर, नर्स, पुलिस, कर्मी ने अपनी जान दांव पर लगाकर सभी लोगों की पूर्ण निष्ठा से सेवा की है। आशा कार्यकर्ताओं ने भी मरीजों की सेवा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कोविड-19 का आरम्भ :

कोरोना महामारी एक खतरनाक बीमारी साबित हुई है। इस महामारी का आरंभ चीन के वुहान शहर में दिसम्बर 2019 में हुआ था। भारत में यह बीमारी की शुरुआत फरवरी 2020 से हुई थी। शुरुआत में कोविड-19 का मरीज किसी शहर में मिले तो वहाँ का पूरा इलाका लॉकडाऊन किया जाता है और मरीज को अस्पताल में ले जाकर क्वारंटाईन किया जाता है। ताकि सभी लोग महामारी के संक्रमण से बच सकें।

कोरोना से लड़ाई जारी :

जब पूरे विश्व में कोरोना महामारी फैल रही गई तब इसने बहुत ही भयानक रूप धारण किया। कोरोना से लड़ने के लिए लोगों ने सामाजिक दूरी, मास्क पहनना, हाथ को सेनिटाइजर लगाना, घर का परिसर साफ-सुथरा रखना, घर का माहौल अच्छा रखना, इन सभी उपायों को अपनाया। अस्पताल में जो भी लोग हैं वह कोरोना से लड़ रहे हैं। महाराष्ट्र में अत्यधिक कोरोना मरीज पाये गए हैं। इस महामारी के दौरान और आपदा भी आयी अस्पताल में ऑक्सीजन टंकी भी लीक होने के वजह से भी अधिक लोगों की मौत हो गई थी। जब कोरोना पर वैक्सीन निकली तब मनुष्य ने थोड़ी सी राहत पायी है और कोरोना को हराया है।

मृत्यु का अकांड तांडव :

जब कोरोना महामारी का संक्रमण भारत में हुआ तब न तो कोई दवाई थी, न ही कोई प्रमाणिक ईलाज था और न ही कोई वैक्सीन थी। इलाज न होने के कारण अधिक से अधिक लोगों की जान चली गई थी। प्रतिदिन मृत्यु का आंकड़ा बढ़ ही रहा था, अधिक से अधिक लोगों की मौतें हुई हैं। लेकिन अब कोरोना पर वैक्सीन तैयार की गई है। इसलिए लोगों की मृत्यु की संख्या कम हो रही है।

सामाजिक परिदृश्य में बदलाव :

कोरोना महामारी के कारण सामाजिक परिवेश में परिवर्तन आ गया है। पहले लोग कोई बीमार हो जाते थे तो सभी लोग उसको देखने के लिए जाते थे हालचाल पूछते थे मगर अब कुछ लोग पास से दूर चले जाते हैं तो कुछ लोग उस मरीज के परिजनों से बात नहीं करते बल्कि उससे मुँह फेर लेते हैं। लॉकडाउन के दौरान लोगों का एक दूसरे से मिलना जुलना कम हो गया है। इस महामारी के कारण लोग एक दूसरे के सुख-दुःख में शामिल नहीं हो सकते खिलाड़ियों का अभ्यास छूट गया कई लोग अवसाद के भी शिकार हो गए। कोरोना के कारण लोगों की जीवन शैली बदल गई है। सामाजिक कार्यक्रमों और उत्सवों का स्वरूप बदल गया है। सीमित संख्या में लोग कार्यक्रमों में उपस्थिति दे रहे हैं। मन्दिरों एवं पूजा स्थलों में दर्शन एवं तौर तरीके में बदलाव आ गए हैं कार्यक्रमों में शांति एवं सादगी आ रही है।

आर्थिक परिदृश्य में बदलाव :

कोरोना के कारण सबसे अधिक बदलाव अर्थ जगत में हुए हैं। आई.एम.एफ के अनुसार इस महामारी के कारण भयानक वैश्विक महामंदी की अपेक्षा है। ऐसा कहा जा रहा है की यह अब तक की सबसे बड़ी महामंदी साबित होगी। भारत के परिप्रेक्ष्य में भी आर्थिक स्थिति भयावह है विकास दर लगातार कम हो रही है! महंगाई दर भी बढ़ रहा है। कोरोना के कारण अधिक से अधिक लोगों की नौकरी चली गई अब उनके पास परिवार जिम्मा उठाने के लिए पैसे नहीं हैं। देश में बेरोजगार 45 वर्षों में 12 करोड़ भारतीयों को नौकरी गंवानी पड़ी है। आर्थिक संकटों के कारण आर्थिक गतिविधियां कुछ प्रतिबंध एवं नियमों के साथ चालू की गई है।

आत्मनिर्भर एवं स्वावलम्बन प्रोत्साहन :

कोरोना संकट के दौरान एक बार पुनः आत्मनिर्भर एवं स्वावलम्बन को प्रमुखता दी जा रही है। लॉकडाऊन के समय लोगों ने स्थानीय स्तरों पर उत्पादित मालों से काम चलाया। इससे स्वदेशी उत्पादों के उपयोग प्रति लोगों का नजरीया बदल गया है। आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने भी आत्मनिर्भर भारत का आवाहन किया है। स्वावलंबन के माध्यम से अपनी आजीविका के साथ साथ अर्थ व्यवस्था को गति दे सकते है। स्वावलंबन के द्वारा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में महान परिवर्तनों का सृजन हुआ। कोरोना के कारण लोगों को कई महत्त्वपूर्ण सीख मिली। जिंदगी जीने का एक नया दृष्टिकोण मिला। इस संकट के कारण मिली सीख को हृदयगम कर तदनुरूप अपनी जीवन धारा को बदलो तो हमारा पथ प्रशस्त होता है। अतः हमें यह याद रखना चाहिए कि "अमंगल मे भी मंगलमय विभु छिपा होता है।" कोरोना से अब मनुष्य को डर नहीं लगता वह इस महामारी से लड़ने के लिए स्वयं आत्मनिर्भर हो गया है। चाहे कोई भी परिस्थिति आये मनुष्य ने डटकर उसका सामना किया है।

टीकाकरण :

कोरोना के संक्रमण से बचने के लिए भारत सरकार ने टीकाकरण जारी किया है। प्रत्येक व्यक्ति को दो टीका लगवाने की आवश्यकता है। अब महाराष्ट्र में मिशन कवच कुंडल अभियान जारी

किया है। इस अभियान के तहत लोगों के घर-घर जा कर टीकाकरण किया जायेगा।

संकट नेतृत्व एवं सफलता :

समर्थ नेतृत्व कुशल माँझी की तरह होता है जो नाव को किनारे लगाने की सफलता प्राप्त करता है। जीवन के हर क्षेत्र में कुशल नेतृत्व का अपरिमित महत्व है। हमारे भारत देश के डॉक्टर, नर्स पुलिस कर्मियों ने मनुष्य की हर हालत में सहायता की! सभी ने बहुत ही अतुलनीय नेतृत्व किया है। खुद की परवाह न कर के लोगों का इलाज किया और देखभाल भी की। प्रतिकूल परिस्थिति और संकट के समय नेतृत्व की परीक्षा होती है! इस परीक्षा में सभी मानव जाति ने सफलता पायी है।

निष्कर्ष : इस प्रकार महामारी कोरोना का मानव जीवन पर सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनितिक प्रभाव पड़ा। सामाजिक परिवेश, आर्थिक समस्या, नौकरी व्यवसाय समस्या, पारिवारिक विपाद, शिक्षा की समस्या इन सभी समस्या से मनुष्य को गुजरना पड़ा। कोरोना महामारी के कारण मानव का बड़ा नुकसान हुआ और जीवन में अधिक से अधिक कष्ट सहने पड़े। विश्व में कोरोना महामारी सबसे खतरनाक महामारी साबित हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. युको रायपुर प्रभा, अंचल कार्यालय रायपुर की गृहपत्रिका वर्ष-3, अंक : 1, अप्रैल. सितंबर 2020, संरक्षक. सत्यरंजन पण्डा, संपादक : सुभाष चंद्र साह
2. मध्यभारती मानविकी एवं समाज विज्ञान की विभागीय शोधपत्रिका अंक: 78, जनवरी-जून-2020 संपादक : डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म. प्र.
3. अमर उजाला समाचार पत्र
4. कोरोना वायरस विकिपीडिया
5. <https://hi.m.Wikipedia.org>>Wiki

पर्यावरण भूगोल

भाग-१

द्वितीय वर्ष कला
सत्र तिसरे
पेपर-२

डॉ. राजेंद्र ओंकार परमार
डॉ. सुधाकर जगन्नाथ बोरसे
डॉ. चिंतामण भागुजी निगळे
प्रा. बाबाजी मोतीराम आहिरे



हिमालया पब्लिशिंग हाऊस

ISO 9001:2015 CERTIFIED

सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाच्या द्वितीय वर्ष कला, भूगोल सामान्य स्तर पेपर क्र.-२, सेमिस्टर-३, शैक्षणिक वर्षे २०२०-२१ पासून बदललेल्या नवीन अभ्यास क्रमानुसार (CBCS Pattern) लिहिलेले 'पर्यावरण भूगोल-I' एकमेव पाठ्यपुस्तक. महाराष्ट्रातील विविध विद्यापीठातील पदवी व पदव्युत्तर अभ्यासक्रमाचा समावेश असलेले तसेच नेट/सेट आणि स्पर्धात्मक परीक्षांकरिता उपयुक्त संदर्भ ग्रंथ.

पर्यावरण भूगोल-I

(ENVIRONMENTAL GEOGRAPHY-I)

• लेखक •

प्रा.डॉ. राजेंद्र ओंकार परमार

(एम.ए., बी.एड., पीएच.डी.)

संशोधन मार्गदर्शक

भूगोल विभाग

चांगु काना ठाकूर महाविद्यालय, नवीन पनवेल, नवी मुंबई.

प्रा.डॉ. सुधाकर जगन्नाथ बोरसे

(एम.ए., पीएच.डी., नेट.)

भूगोल विभाग

आर.एन.सी. आर्ट्स, जे.डी.बी. कॉमर्स व

एन.एस.सी. सायन्स कॉलेज, नाशिक रोड, नाशिक.

प्रा. डॉ. चिंतामण भागुजी निगळे

(एम.ए., बी.एड., पीएच.डी., सेट.)

भूगोल विभाग प्रमुख

कर्मवीर गणपत दादा मोरे कला, वाणिज्य व

विज्ञान महाविद्यालय निफाड, जि. नाशिक.

प्रा. बाबाजी मोतीराम आहिरे

(एम.ए., बी.एड.)

भूगोल विभाग

मराठा विद्या प्रसारक समाजाचे,

कला व वाणिज्य महाविद्यालय सोयगाव, मालेगाव, जि. नाशिक.



Himalaya Publishing House

ISO 9001:2015 CERTIFIED

लेखकांचे मनोगत

‘पर्यावरण भूगोल-I’ हे पाठ्यपुस्तक विद्यार्थी आणि प्राध्यापक बंधूंच्या हाती सुपूर्द करताना आम्हाला अत्यंत आनंद होत आहे. सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाच्या जून २०२० पासूनच्या द्वितीय वर्ष कला, पेपर क्रमांक-२, सेमेस्टर-३ साठी, नवीन सुधारित अभ्यासक्रमानुसार लिहिलेले हे पुस्तक असले तरी, महाराष्ट्रातील विविध विद्यापीठातील प्राध्यापक व बी.ए. च्या विद्यार्थ्यांना उपयुक्त ठरेल याचा विचार करून सदर लिखाण करण्यात आलेले आहे.

भूगोल विषयाची बांधिलकी, अध्ययन व अध्यापनाचा प्रदीर्घ अनुभव, तज्ञ तसेच अनुभवी व्यक्तींशी चर्चा-संवाद, चालू घडामोडी व मूळ संदर्भ ग्रंथांच्या आधारे हे पुस्तक लिहिलेले आहे. पर्यावरण भूगोलातील पर्यावरणाचे महत्व, अभ्यास पद्धती, परिसंस्था, जैवविविधता, पर्यावरण प्रदूषण हे घटक तसेच उपघटकांचे सुलभ आकलन व्हावे यासाठी विषयाची मांडणी सुटसुटीत व मुद्देसूद करून विविध सारणी, आकृत्या, नकाशे, छायाचित्रे व उदाहरणांचा वापर केलेला आहे. या पुस्तकाचे प्रमुख वैशिष्ट्ये म्हणजे प्रत्येक प्रकरणाच्या शेवटी बहुपर्यायी प्रश्न व त्यांची उत्तरे दिलेली आहेत. याचा उपयोग सद्यस्थितीत विद्यार्थी व प्राध्यापक मित्रांना निश्चितच उपयुक्त ठरेल. सदरचे पुस्तक स्पर्धात्मक परीक्षा विशेषतः नेट/सेट परिक्षांना जास्तीत जास्त उपयुक्त होईल असाही प्रयत्न केलेला आहे. प्राध्यापक मित्र, अभ्यासक व विद्यार्थ्यांनी या पुस्तकात सुधारणा करण्याच्या दृष्टीने काही सूचना केल्यास, त्यांचे स्वागतच केले जाईल व पुढील आवृत्तीत निश्चितपणे यथायोग्य बदल केले जातील.

सदरचे पुस्तक लेखन करताना अनेक गुरुवर्य, मित्रमंडळी व कुटुंबियांचे सहकार्य लाभलेले आहे. या पुस्तकाच्या लिखाणासाठी आमचे प्रेरणास्थान व गुरुवर्य सेवानिवृत्त प्रा.डॉ.प्रवीण सप्तर्षी, सेवानिवृत्त प्राचार्य डॉ. विठ्ठल धारपुरे, प्रा.डॉ. श्रीकांत कार्लेकर तसेच पर्यावरणतज्ञ व शास्त्रज्ञ, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाचे कुलगुरू मा. प्रा.डॉ. नितीन करमरकर सर यांचे प्रोत्साहन अत्यंत महत्वाचे ठरले आहे. सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाचे भूगोल अभ्यास मंडळाचे अध्यक्ष, प्रा.डॉ. ज्योतिराम मोरे व भूगोल विभाग प्रमुख प्रा.डॉ. सुधाकर परदेशी यांचे मार्गदर्शन महत्वाचे ठरले.

तसेच सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाच्या भूगोल अभ्यास मंडळाचे सदस्य डॉ. सुभाष निकम, डॉ. प्रमोदकुमार हिरे, डॉ. अमित धोरडे, डॉ. तुषार शितोळे, डॉ.अर्जुन मुसमाडे, डॉ. विजय भगत, डॉ. रघुनाथ नजन, डॉ. रविंद्र शिंदे, आणि डॉ. संजय पगार यांच्या कडून मिळालेली प्रेरणा व त्यांनी केलेले सहकार्य यामुळे आम्ही या सर्वांचे ऋणी आहोत.

याशिवाय आर.एन.सी. आर्ट्स, जे.डी.बी. कॉमर्स व एन.एस.सी. सायन्स कॉलेज, नाशिकरोड, येथील प्र.प्राचार्या, प्रा.डॉ. मंजुषा कुलकर्णी, मराठा विद्या प्रसारक समाज संस्थेचे कर्मवीर गणपत दादा मोरे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय निफाड येथील प्राचार्य डॉ. आर.एन. भवरे, मराठा विद्या प्रसारक समाजाचे, कला व वाणिज्य महाविद्यालय सोयगाव, मालेगाव, जि. नाशिक येथील प्राचार्य, डॉ. एस. बी.पाटील आणि चांगु काना ठाकूर महाविद्यालय पनवेलचे प्र.प्राचार्य, प्रा.डॉ.संजय पाटील यांचे अनमोल मार्गदर्शन व सहकार्य महत्वाचे ठरले.

तसेच एस.एन.डी.टी. विद्यापीठ, पुणे येथील भूगोल विभाग प्रमुख प्रा.डॉ. वीरेंद्र नगराळे, प्रा.डॉ. सचिन देवरे, आर.एन.सी. आर्ट्स, जे.डी.बी. कॉमर्स व एन.एस.सी. सायन्स कॉलेज, नाशिकरोड, कॉलेजचे आमचे सहकारी उपचार्य व भूगोल विभाग प्रमुख, डॉ. अनिलकुमार पठारे, प्रा. नरेश पाटील, डॉ. अर्चना पाटील, प्रा. लक्ष्मण शेंडगे, ग्रंथपाल श्री. एस.व्ही. चंद्रात्रे, कर्मवीर गणपत दादा मोरे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय निफाड येथील आमचे सहकारी श्री. के. एस. गोपाळे, सौ.सी. डी. निकम मॅडम, ग्रंथपाल प्रा. एस. डी. आहेर, मराठा विद्या प्रसारक समाजाचे, कला व वाणिज्य महाविद्यालय सोयगाव, मालेगाव, जि. नाशिक येथील भूगोल विभाग प्रमुख, प्रा. एन. बी. नेरकर, ग्रंथपाल डॉ. केतन देवरे आणि चांगु काना ठाकूर महाविद्यालयाचे डॉ. दिपक नारखेडे, ग्रंथपाल प्रा. रमाकांत नवघरे व श्री. कमलाकर कणेकर यांनी वेळोवेळी केलेले सहकार्य व संदर्भ ग्रंथ उपलब्ध करून दिल्याबद्दल आम्ही त्यांचे मनःपूर्वक आभारी आहोत.

पुस्तकातील विविध तक्ते, आकृत्या, नकाशे तयार करणे व त्यांची शिस्तबध्दपणे मांडणी करून पुस्तकाला आकर्षक आणि रेखीव बनविण्याचे कार्य चिरंजीव वैभव राजेंद्र परमार यानी केले. त्याचे हे कार्य कौतुकास्पद असून आम्ही त्याचे मनापासून आभारी आहोत.

याशिवाय हिमालय पब्लिशिंग हाऊस प्रा.लि. चे प्रकाशक श्री.के.एन. पांडे, तसेच श्री.एस.के. श्रीवास्तव यांच्या अनमोल सहकार्यामुळेच हे पुस्तक आपल्यापर्यंत सादर करणे शक्य झाले.

- लेखक

SAVITRIBAI PHULE PUNE UNIVERSITY

Revised Syllabus w.e.f. Academic Year, 2020-21 (CBCS)

S.Y.B.A. Geography, General Paper-II, Semester-III

(Environmental Geography-I)

SUBJECT CODE: Gg: 210(A), PAPER: CC-1C (2020-21), Credits-03

अभ्यासक्रमाचे मराठी रुपांतर

प्रकरण	प्रकरणाचे शीर्षक	उप-घटक		तासिका
१.	पर्यावरण भूगोल परिचय	१.	पर्यावरण भूगोलाची व्याख्या, स्वरूप व व्याप्ती	१२
		२.	पर्यावरणाचे प्रकार	
		३.	पर्यावरण भूगोलाचे महत्व	
		४.	पर्यावरण भूगोलाच्या अभ्यास पद्धती	
२.	परिसंस्था	१.	परिसंस्थेचा अर्थ, संकल्पना व व्याख्या	१२
		२.	परिसंस्था रचना (जैविक आणि अजैविक घटक) अन्नसाखळी, उर्जा विनिमय स्तर, अन्नजाळी, ऊर्जाप्रवाह	
		३.	परिसंस्थेचे प्रकार अ) विषुववृत्तीय परिसंस्था ब) तळी परिसंस्था	
३.	जैव विविधता आणि तिचे संवर्धन	१.	जैव विविधतेची संकल्पना	१२
		२.	जैव विविधतेची महत्व आणि आर्थिक क्षमता	
		३.	जैवविविधतेचा इतिहास व भारतातील जैवविविधता संवेदनशील प्रदेश	
		४.	जैव विविधतेचे संवर्धन	
४.	पर्यावरण प्रदूषण	१.	प्रदूषणाची संकल्पना	१२
		२.	हवा प्रदूषण: कारणे, परिणाम आणि उपाय योजना	
		३.	जल प्रदूषण कारणे, परिणाम आणि उपाय योजना	
		४.	मृदा प्रदूषण: कारणे, परिणाम आणि उपाय योजना	

अनुक्रमणिका

प्रकरण १: पर्यावरण भूगोलाचा परिचय

१-३५

- * प्रस्तावना * पर्यावरण भूगोलाच्या व्याख्या * पर्यावरणीय भूगोलाचे स्वरूप * पर्यावरण भूगोलाची व्याप्ती * पर्यावरणाची संकल्पना व पर्यावरणाचे प्रकार: निर्मितीनुसार, जैविक स्थितीनुसार, भौतिक गुणधर्मानुसार * पर्यावरण भूगोलाचे महत्व * पर्यावरणीय भूगोलाच्या अभ्यासपद्धती: परिसंस्था पद्धत, वर्तणूक पद्धत, निसर्गवादी व शक्यतावादी पद्धत * अभ्यासार्थ प्रश्न * बहुपर्यायी प्रश्न *

प्रकरण २: परिसंस्था

३६-७६

- * प्रस्तावना * परिसंस्थेचा अर्थ, संकल्पना, परिसंस्थेच्या व्याख्या * परिसंस्थेची वैशिष्ट्ये * परिसंस्थेचे मूलभूत तत्वे * परिसंस्थेची रचना * परिसंस्थेचे घटक: परिसंस्थेचे अजैविक घटक, परिसंस्थेचे जैविक घटक * परिसंस्थेचे कार्य: प्राथमिक आंतरक्रिया, ऊर्जेचे वितरण, मृत प्राण्यांच्या शरिरातील घटकांचे चक्र * अन्नसाखळी, * ऊर्जा विनिमय स्तर * अन्नजाळी * परिसंस्थेची मूलभूत कार्यस्थळ * पोषक द्रव्यांचे चक्रीकरण: जलचक्र, कार्बनचक्र, ऑक्सिजन चक्र, नायट्रोजन चक्र * परिसंस्थेचे प्रकार * नैसर्गिक परिसंस्था: भू-परिसंस्था; विषुववृत्तीय जंगल परिसंस्था, मान्सून हवामान परिसंस्था, शीत कटिबंधीय हवामान परिसंस्था, गवताळ परिसंस्था, वाळवंटी परिसंस्था * जल परिसंस्था: सागरी परिसंस्था, खाडी परिसंस्था, नदी परिसंस्था, तळी परिसंस्था * अभ्यासार्थ प्रश्न * बहुपर्यायी प्रश्न *

प्रकरण ३: जैवविविधता आणि तिचे संवर्धन

७७-९८

* प्रस्तावना * जैवविविधतेची संकल्पना * जैवविविधतेचे प्रकार * जैवविविधतेची आर्थिक महत्व आणि क्षमता * जैव विविधतेचा ज्ञास: मानव निर्मित कारणे, नैसर्गिक कारणे * भारतातील जैवविविधता संवेदनशील प्रदेश: हिमालय, पश्चिम घाट, इंडोबर्मा * जैवविविधता संवर्धन: मूलस्थानी संरक्षण, परस्थानी संरक्षण * जैवविविधता संवर्धनासाठी उपाय योजना * अभ्यासार्थ प्रश्न * बहुपर्यायी प्रश्न

प्रकरण ४: पर्यावरण प्रदूषण

९९-१३६

* प्रस्तावना * प्रदूषणाची संकल्पना * प्रदूषणाच्या व्याख्या * प्रदूषणाचे प्रकार * हवा प्रदूषण: हवा प्रदूषणाची व्याख्या, हवा प्रदूषणाचे प्रमुख स्रोत, हवा प्रदूषणाची कारणे; नैसर्गिक कारणे, मानवी कारणे, हवा प्रदूषणाचे विविध परिणाम, हवा प्रदूषण कमी करण्यासाठी उपाय योजना * जलप्रदूषण: जल प्रदूषणाची व्याख्या, जल प्रदूषणे, जल प्रदूषणाचे प्रका, जलप्रदूषणाची कारणे, जल प्रदूषणाचे परिणाम, जल प्रदूषण नियंत्रण करण्यासाठी उपाय योजना * मृदा प्रदूषण: मृदा प्रदूषणाची व्याख्या, मृदा प्रदूषणाची कारणे, मृदा प्रदूषणाचे परिणाम, मृदा प्रदूषण नियंत्रणासाठी उपाय योजना * ध्वनि प्रदूषण: ध्वनी प्रदूषणाची व्याख्या, ध्वनि प्रदूषणाची कारणे, ध्वनि प्रदूषणाचे परिणाम, ध्वनि प्रदूषणावरील उपाय * प्रदूषण रोखण्यासाठी वैयक्तिक पातळीवरील उपाय योजना * अभ्यासार्थ प्रश्न * बहुपर्यायी प्रश्न

लेखक परिचय



प्रा. डॉ. राजेंद्र ओंकार परमार (एम.ए., बी.एड., पीएच.डी.)

भूगोल विभाग, चांगु काना ठाकूर महाविद्यालय, नवीन पनवेल, येथे सहा.प्राध्यापक म्हणून कार्यरत. एकूण अध्यापन 25 वर्षे, संशोधन मार्गदर्शक व मा.सदस्य, भूगोल अभ्यास मंडळ, मुंबई विद्यापीठ, पाच भूगोल संस्थांचे आजीव सभासद, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्तरावरील जर्नल्स मध्ये 26 संशोधन लेख प्रकाशित, एकूण 17 पाठ्यपुस्तक व संदर्भ ग्रंथ प्रकाशित, विविध कार्यशाळा व चर्चासत्रांमध्ये 33 ठिकाणी सादरीकरण, 42 ठिकाणी सहभाग व 25 ठिकाणी साधन व्यक्ती म्हणून कार्य. राष्ट्रीय स्तरावरील तीन व राज्य स्तरावरील तीन पुरस्कार प्राप्त.



प्रा. डॉ. सुधाकर जगन्नाथ बोरसे (एम.ए., पीएच.डी., नेट)

भूगोल विभाग, आर.एन.सी. आर्ट्स, जे.डी.बी. कॉमर्स व एन.एस.सी. सायन्स कॉलेज, नाशिक रोड, नाशिक. येथे 12 वर्षांपासून सहा. प्राध्यापक म्हणून कार्यरत. एका शैक्षणिक संस्थेच्या आजीव सभासद. राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय जर्नल्स मधून 30 संशोधन लेख प्रकाशित. एकूण 2 पाठ्यपुस्तके प्रकाशित. विविध कार्यशाळा व चर्चासत्रांमध्ये 20 पेपरचे सादरीकरण व 24 ठिकाणी सहभाग. राष्ट्रीय स्तरावरील एक व राज्य स्तरावरील एक पुरस्कार प्राप्त.



प्रा. डॉ. चिंतामण भागुजी निगळे (एम.ए., बी.एड., पीएच.डी., सेट)

भूगोल विभाग, मराठा विद्या प्रसारक समाज संस्थेचे कर्मवीर गणपत दादा मोरे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय निफाड, जि. नाशिक येथे सहा. प्राध्यापक व भूगोल विभाग प्रमुख म्हणून कार्यरत. एकूण अध्यापन 14 वर्षे, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय जर्नल्स मधून 18 संशोधन लेख प्रकाशित. विविध कार्यशाळा व चर्चासत्रांमध्ये 24 ठिकाणी सहभाग तसेच राष्ट्रीय स्तरावरील एक व राज्य स्तरावरील एक पुरस्कार प्राप्त.



प्रा. बाबाजी मोतीराम आहिरे (एम.ए. बी.एड.)

भूगोल विभाग मराठा विद्या प्रसारक समाजाचे कला व वाणिज्य महाविद्यालय सोयगाव, ता. मालेगाव, जि. नाशिक येथे सहाय्यक प्राध्यापक म्हणून कार्यरत, अध्यापनाचा 17 वर्षांचा अनुभव, पी. एच.डी. संशोधन करित असून राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्तरावरील जर्नल्समध्ये चार संशोधन लेख प्रकाशित. विविध कार्यशाळा व चर्चासत्रात सहभाग.

www.himpub.com

₹ 260/-

(SJIF) Impact Factor-8.575

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

May -2022

ISSUE No- 352(CCCLII) D



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)



B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

May -2022

ISSUE No- (CCCLII) 352

**Sciences, Social Sciences, Commerce,
Education, Language & Law**

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor

Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr.Dinesh W.Nichit

Editor

Principal,

Sant Gadge Maharaj Art's Comm,Sci Collage, Walgaon.Dist. Amravati.

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher



Editorial Board

Chief Editor -

Prof.Virag S.Gawande,
Director,
Aadhar Social Research &
Development Training Institute, Amravati. [M.S.] INDIA

Executive-Editors -

- ❖ **Dr.Dinesh W.Nichit** - Principal, Sant Gadge Maharaj Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.
- ❖ **Dr.Sanjay J. Kothari** - Head, Deptt. of Economics, G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

Advisory Board -

- ❖ **Dr. Dhnyaneshwar Yawale** - Principal, Sarswati Kala Mahavidyalaya , Dahihanda, Tq-Akola.
- ❖ **Prof.Dr. Shabab Rizvi** ,Pillai's College of Arts, Comm. & Sci., New Panvel, Navi Mumbai
- ❖ **Dr. Udaysinh R. Manepatil** ,Smt. A. R. Patil Kanya Mahavidyalaya, Ichalkaranji,
- ❖ **Dr. Sou. Parvati Bhagwan Patil** , Principal, C.S. Shindure College Hupri, Dist Kolhapur
- ❖ **Dr.Usha Sinha** , Principal ,G.D.M. Mahavidyalay,Patna Magadh University.Bodhgay Bihar

Review Committee -

- ❖ **Dr. D. R. Panzade**, Assistant Pro. Yeshwantrao Chavan College, Sillod. Dist. Aurangabad (MS)
- ❖ **Dr.Suhas R.Patil** ,Principal ,Government College Of Education, Bhandara, Maharashtra
- ❖ **Dr. Kundan Ajabrao Alone** ,Ramkrushna Mahavidyalaya, Darapur Tal-Daryapur, Dist-Amravati.
- ❖ **DR. Gajanan P. Wader** Principal , Pillai College of Arts, Commerce & Science, Panvel
- ❖ **Dr. Bhagyashree A. Deshpande**, Professor Dr. P. D. College of Law, Amravati]
- ❖ **Dr. Sandip B. Kale**, Head, Dept. of Pol. Sci., Yeshwant Mahavidyalaya, Seloo, Dist. Wardha.
- ❖ **Dr. Hrushikesh Dalai** , Asstt. Professor K.K. Sanskrit University, Ramtek

Our Editors have reviewed paper with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responicible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers.

- **Executive Editor**

Published by -

Prof.Virag Gawande

Aadhar Publication ,Aadhar Social Research & Development Training Institute, New Hanuman Nagar,
In Front Of Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College,Amravati
(M.S) India Pin- 444604 Email : aadharpublication@gmail.com

Website : www.aadharsocial.com Mobile : 9595560278 /

INDEX- D

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्राच्या नेतृत्वाचे शिल्पकार	डॉ. बिडवे टी. एस.	1
2	यशवंतराव चव्हाण एक बहुआयामी व्यक्तिमत्व	डॉ. इरलापल्ले पल्लवी भागवतराव	4
3	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या जीवन व कार्याचा अभ्यास	डॉ.राज चव्हाण , प्रा. सोनिया चव्हाण	7
4	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे महिलांच्या विकासातील योगदान.	प्रा.डॉ.एन. व्ही. शेवाळे	14
5	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्त्री विषयक कार्य.	प्रा डॉ काशीद एस व्ही	17
6	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कृषी क्षेत्रा विषयीचे विचार आणि आजची प्रासंगिकता	डॉ. मगर एस. आर.	20
7	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार	प्रा. दत्तात्रय प्रभुराव मुंढे	23
8	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे अस्पृश्यते संबंधी विचार	प्रा.संतोष विश्वनाथ यादव	26
9	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार व कार्य	मडके साधना हरिदास	29
10	नाशिक जिल्हयातील मध्यम जलसिंचन प्रकल्पांचा आढावा आहिरे बाबाजी मोतीराम , प्रा.डॉ. राजपंगे माधव गणपती		31
11	'महाराष्ट्राच्या जडणघडणीत यशवंतराव चव्हाण यांचे योगदान' प्रा.डॉ. रमेश धोंडिराम राठोड , डॉ. सोनटक्के रमेश शंकरराव		38
12	अनुवाद में रोजगार के अवसर	प्रा.डॉ. बाचकर बाळासाहेब डी.	43
13	अनुवादका महत्व एवं प्रयोजनीयता	डॉ.पंडित बन्ने	46
14	इलेक्ट्रॉनिक मिडीया और रोजगार के अवसर	डॉ. चौधरी के. बी.	49
15	विज्ञापन का रंगीन संसार और रोजगार	डॉ. सुमन अग्रवाल	51
16	इलेक्ट्रॉनिक माध्यम बनाम मुद्रित माध्यमों का व्यावसायिकरण	डॉ. गव्हाणे व्ही.बी	55
17	पत्रकारिता में रोजगार के अवसर	प्रो. डॉ.महेमूद पटेल	57
18	अनुवाद में रोजगार के अवसर	प्रतुल सत्येंद्र चव्हाण	60

19	अनुवाद लेखन: तंत्र व स्वरूप	प्रा. लक्ष्मण गित्ते	64
20	दूरदर्शन : लेखन व तंत्र स्वरूप	श्रीम.सोनाली सुनिल भागवत	67
21	पटकथा व स्तंभलेखन	डॉ. आर. टी. सोनटक्के	72
22	भाषा आणि प्रकाशन व्यवसाय	लक्ष्मण वसंत भागवत	76
23	भाषिक कौशल्ये व व्यक्तीमत्व विकास	श्री.प्रविण रमेश साळवे	80
24	मराठी भाषा आणि रोजगाराभिमुखता	प्रा.डॉ. सोपान माणिकराव सुरवसे	83
25	व्यक्तिमत्व विकासात भाषिक कौशल्याचे स्थान	डॉ. गजानन लोंढे	86
26	श्रवण कौशल्य आणि व्यक्तिमत्व विकास	प्रगती पाटील	91
27	सुत्रसंचालनाचे स्वरूप आणि तंत्र	प्रा. डॉ. गोपीनाथ पा. बोडखे	95
28	Merging of Public Sector Banks in Maharashtra State Dr.M.S.Jadhav , Prof. Dr. S.N.Waghule		100
29	Climate Change Research and Analysis in India Dr. Tekade Mangal Shantinath		103
30	Identity Crisis in the Novel of Arundhati Roy. Vishvajeet Haridas Vidhate		107
31	Investigation of english communication skills of university level students. Vidhate Vishvajeet Haridas		109
32	Approaches to Reinforcement learning and Its overall scope towards Machine Learning Alaknanda Pathak , Dr. Sanjeevani D. Munde		113
33	An Appraisal On Horticulture Activities In Meghalaya Ibianglang Kharbuki , Dr.Madhav Rajpange		115
34	Causes of Human Population Growth: A Geographical Study Dr. M. G. Rajpange , Mr. Bhange S. S.		119
35	“An Analytical study of online shopping& shopping sites in India –An Overview Deepali Ashok Pagare ,Nikhil Maruti Athwale ,Dr. Dile, D.B.Borade		123
36	Dr. Babasaheb Ambedkar's Thinking on Social Harmony and Its Impact on Society Dr. Gore B.D.		127
37	English Language As A Compulsory Subject In Competitive Examinations Mr. Babu Ankush Randive		130
38	English: A Language Of Opportunities Dr. Abhay Balbhim Shinde		133
39	English as an opportunity to access Entrepreneurship Mr. Karale N. G. , Mr. Kalyankar A. S.		135
40	English – A Language Of Opportunities Asst. Prof. Madhu Baburao Kuchekar		138
41	The Impact Of English Language On Journalism And Mass Media Mr. Gawali N. T.		140
42	Personality Development And English Communication Dr. Neerja Batle		142

43	Role Of English Language In Personality Development Kuchekar Shailaja Baburao	145
44	English: Opening Of New Opportunities For Employment Mr. Kalyankar A. S.& Mr. Karale N. G.	147
45	Dr. Babasaheb Ambedkar's Vision on Nationalism Dr. Bhagwan Shankarrao Waghmare	149
46	Dr.Babasaheb Ambedkar's Roll in the Constitution for Human Rights Dr. Suryakant Dnyanoba Aradale	152
47	Ambedkar's The Annihilation of the Caste:Marginalism of Untouchables, Labour empowerment, Economic Reformation, Social Emancipation, Political Reformation and Caste System in Hinduism. Dr. Kadam Rupali Chandrakant	154
48	पर्यटन व पर्यटक Prof.Dr. Thore Shivaji Dattatraya	158
49	भारतीय कृषी समस्या आणि शाश्वत कृषी विकासाची गरज एक तौलनिक अभ्यास प्रा.डॉ. डोके ए.टी.	163

**“नाशिक जिल्हयातील मध्यम जलसिंचन प्रकल्पांचा आढावा”****आहिरे बाबाजी मोतीराम**

संशोधक विद्यार्थी

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ,
औरंगाबाद
केंद्र - भूगोल विभाग औरंगाबाद विद्यापीठ**प्रा.डॉ. राजपंगे माधव गणपती**

मार्गदर्शक

भूगोल विभाग प्रमुख व संशोधन मार्गदर्शक
आनंदराव धोंडे उर्फ बाबाजी महाविद्यालय,
कडा ता. आष्टी. जि. बीड - ४१४२०२**गोषवारा :**

भारत देशचा शेती हा अर्थकारणाचा कणा आहे. कृषी उत्पादनावर आधारित उद्योगासाठी लागणारा कच्चा माल शेती क्षेत्रातूनच उपलब्ध होतो. अन्न, वस्त्र, निवारा या मूलभूत गरजांची पूर्तता शेती व्यवसायातून होते. परंतु आज शेती केवळ उदरनिर्वाहाचे साधन राहिले नसून त्यास उद्योग व्यवसायाचा दर्जा प्राप्त झालेला आहे. म्हणून हा व्यवसाय जसा विकसीत होत आहे. तसेच कृषी तंत्र विकसित होत आहे. वाढत्या लोकसंख्येला अन्न धान्याचा पुरवठा करण्यासाठी शेतीच्या उत्पादनवाढीची गरज १९ व्या शतकात जाणवायला लागली. स्वातंत्र्योत्तर काळातील हरीत क्रांती पूर्व काळ म्हणजे सन १९५० ते १९६५ या टप्प्यात शेतीच्या विकासाला चालना देण्यासाठी अनेक योजना आखल्या गेल्या पासून तालुका बिज गुणन केंद्रामार्फत दर्जेदार बियाणे उत्पादनास सुरुवात झाली. १९५७ सन याकाळात लागवडीखालील क्षेत्राच्या विस्ताराबरोबरच सिंचनाखालील क्षेत्र वाढवण्यावर भर दिला गेला. सन १९६५ व १९६६ पासून विविध पिकांच्या संकरीत वाण निर्मितीमुळे देशत हरीत क्रांतीचा पाया घातला गेल्यापासून भु-सुधारणेच्या सन १९७४ यानंतरच्या काळातील पंचवार्षिक योजनांद्वारे शेती विकासावर विशेष भर देण्यात आला. शेती कामाबरोबरच नाला बांध बंदिस्तीची कामे खात्यामार्फत सुरुवात झाल्याने विहिरी व भुगर्भातील पाण्याच्या पातळीत वाढ होण्यास मदत झाली.

की वर्ड (कळ शब्द): बीजगुणन, हरीत क्रांती, सिंचन, धरण, पाझरतलाव, खोरे, लागवड**प्रस्तावना :**

भारतासारख्या विकसनशील देशात कृषी व्यवसायाला खुप महत्वाचे स्थान आहे. शेती उत्पादनवाढीसाठी सधन शेती पध्दती द्वारे बी-बियाणे, किटकनाशके व उपलब्ध पाण्याचा वापर, खते यांचा वापर मोठ्या प्रमाणावर सुरु झाला. त्यामुळे कृषी उत्पादन वाढीस मदत झाली. नैसर्गिक साधनसंपत्तीत पैकी पाणी हा सर्वात महत्वाचा घटक आहे. कारण पृथ्वी तलावरील सर्व सजीवांना आणि विकास कार्यांना पाण्याची नितांत आवश्यकता आहे. पाणी अमूल्य असा ठेवा आहे. पाणी हे मानवी जीवनामध्ये त्याच्या निर्मिती पासून त्याच्या आतापर्यंत उपयोगी पडत असते सर्व नैसर्गिक साधनांपैकी जल हे कदाचित असे एकमेव संसाधन असेल की, ज्याचा स्पर्श संस्कृती व समाज सुधारणांच्या अंगांना भिडलेला असतो. मानवाच्या सामाजिक, आर्थिक आणि सांस्कृतिक विकासात पाण्याने एक प्रभावी शक्ती म्हणून आपली भूमिका बजावलेली आहे. पाण्याच्याभोवती आपली सर्व संस्कृती उदयाला येऊन बहरली, काहीशी स्थिरावली पण हीच जलाची उपलब्धता दिवसेंदिवस कमी होऊ लागल्यामुळे भीती वाटू लागली आहे. आरंभीच्या कालखंडात मानवाच्या संस्कृतीत कृषी विकास हा प्रामुख्याने सिंचन सुविधांच्या उपलब्धतेवर आधारित होता. मानवाचे या क्षेत्रातील ज्ञान प्रगत होत गेले. त्यानुसार कृषी क्षेत्राची समृद्धीकडे झपाट्याने वाढ होत गेली. थोड्या फार फरकाने जगभर ही प्रक्रिया घटत असल्याचे आपल्याला धरणांच्या इतिहासांच्या अवलोकनावरून समजू शकते. भारताच्या संस्कृती बरोबर इजिप्त, मेसोपोटेमिया, चीन आदी संस्कृती होऊन गेल्यात त्यांनी या क्षेत्रात केलेल्या प्रगतीचे लिखित पुरावे मागे ठेवल्यामुळे त्यांच्या कार्याचा संक्षिप्त मागावा घेता येतो.

उद्दिष्टे :

- १) नाशिक जिल्हयातील जलसिंचनाचा सध्या स्थितीचा अभ्यास करणे.
- २) नाशिक जिल्हयातील मध्यम जलसिंचन प्रकल्पांचा अभ्यास करणे.



**संशोधन पध्दती :**

सदर शोध निबंध तयार करण्यासाठी संशोधकाने द्वितीय स्त्रोताचा आधार घेतलेला आहे. दुय्यम सामुग्री संकलनासाठी विविध प्रकारची संकेतस्थळे, प्रकाशने, संदर्भ ग्रंथ, पुस्तके, दैनिक वृत्तपत्रे, गॅझेटियर इत्यादी सामुग्रीचा वापर केलेला आहे.

सिंचनाचा इतिहास :

धरणांचा इतिहास फार प्राचीन आहे. जगातील पहिले मानवी संस्कृतीच्या कालखंडात कृषी विकास प्रामुख्याने सिंचन सुविधांच्या उपलब्धतेवर आधारीत होता. धरण इ. पू. २९०० च्या सुमारास इजिप्त मध्ये गारावीखोऱ्यात कोशेश येथे बांधले गेले. दोन डोंगरांना जोडणाऱ्या या धरणाची लांबी ३०० फूट व १५ मी. उंचीचे धरण हे सर्वात प्राचीन धरण मानण्यात येते. परंतु अलीकडच्या संशोधकांनी हा विचार चुकीचा ठरवला आहे. यापूर्वी धोलविरा आणि खंबायत जन व्यवस्थापन पध्दती कार्यरत होत्या पू. स. खंबायतच्या कालखंडात इ. ७५०० व वर्षे धोलविरा यांचा काल इ. पू. स. ३००० ते इ. पू. स. २५०० च्या दरम्यान होता. याठिकाणी उत्कृष्ट जल व्यवस्थापन पध्दती अनेक शतके कार्यरत होत्या. प्राचीन काळी भारत या देशांमध्ये शेतीसाठी आणि पिण्यासाठी व उपयोगासाठी व पासून संरक्षण करण्याकरिता अनेक लहान मोठे धरणे बांधली गेली होती. गुजरातमधील सिंधू संस्कृती कालीन लोथलया वासाहतीमधील जलव्यवस्थापन जगातल्या उत्तम जलव्यवस्थापनातील एक आदर्श मानले जाते. यामुळे व्यवस्थापन क्षेत्रात भारत हा सर्वात प्रगत आणि पुरातन देश होता असे म्हणता येईल.

नाशिक जिल्हयातील जलसिंचन प्रकल्पाची सद्यःस्थितीचा अभ्यास :

नाशिक जिल्हयात सिंचन प्रकल्पांचा अभ्यास केला असता असे लक्षात येते की, जिल्हयामध्ये १३ मोठे, ८ मध्यम प्रकल्प आहेत. प्रत्येक तालुक्यांमधील लघुसिंचन व राज्य शासनाच्या अखत्यारित्या असलेले ६६, स्थानिक प्रशासन अंतर्गत लघु प्रकल्प आहेत. नाशिक जिल्हयात सिंचन प्रकल्पांतर्गत पाझर तलावांची संख्या ८६४, कोल्हापूर बंधारे २२४, भुयारी साठवण बंधारे १०८० आहेत.

नाशिक जिल्हयातील खोरे निहाय सिंचन प्रकल्प दर्शविण्यात आले आहेत.

अ. नं.	तालुका	खारे/उपखा रे	मोठे प्रकल्प	मध्यम प्रकल्प	लघुप्रकल्प	
					राज्य	स्थानिक
१	सुरगाणा	गिरणा	चणकापूर, पुनद		४	५८
२	कळवण				८	८३
३	देवळा				३	५
४	बागलाण			हरणबारी, केळझर	५	१०८
५	मालेगाव				७	१५७
६	नांदगाव	गिरणा	गिरणा	माणिकपुंज, नाग्यासाक्या	८	४४
७	चांदवड		दरसवाडी		४	४५
८	दिंडोरी		करंजवण, वाघाड, ओझर, खेड, पालखेड, पुणेगाव, तिसगाव	आळंदी	१०	३८
९	पेठ				१४	३०
१०	त्र्यंबकेश्वर				११	५
११	नाशिक		गंगापूर	गौतमी गोदावरी कश्यपी	४	१८
१२	इगतपुरी		दारणा, काडवा		५	१४
१३	सिन्नर			भोजापूर	७	६६
१४	निफाड				३	४
१५	येवला				३	४०



एकुण	१३	०८	९६	७१५
------	----	----	----	-----

संदर्भ : नाशिक जिल्हा आर्थिक-सामाजिक समालोचन २०१८-१९

नाशिक जिल्हयातील मध्यम जलसिंचन प्रकल्पाचा अभ्यास

नाशिक जिल्हयात १) हरणबारी, २) केळझर, ३) नाग्यासाक्या, ४) कश्यपी, ५) गौतमी गोदावरी, ६) भोजापूर, ७) माणिकपुंज, ८) आळंदी हे मध्यम प्रकल्प आहेत.

अ. क.	बाब	मध्यम प्रकल्प							
		कश्यपी	गौतमी गोदावरी	आळंदी	हरणबारी	केळझर	माणिकपुंज	नाग्यासाक्या	भोजापूर
१	प्रकल्पाचेनाव								
२	प्रकल्प ज्या तालुक्यात आहेत त्या तालुक्याचे नाव	नाशिक	नाशिक	दिंडोरी	बागलाण	बागलाण	नांदगाव	नांदगाव	सिन्नर
३	काम पूर्ण झाल्याचे वर्ष	२००६	२००६	१९८५	१९९०	१९८५	२००८	१९९४	१९७३
४	धरणाची उंची (मी.)								
	अ) मंजूर झालेली	४१.७५	५९.८७	२९.२८	३४.०२	३२.५०	३२.९२	२३.०९	२९.६५
	ब) पूर्ण झालेली	४१.७५	५९.८७	२९.२८	३४.०२	३२.५०	३२.९२	२३.०९	२९.६५
५	कालवा	उ/डा			उ/डा	डावा	उजवा	उ/डा	
	अ) एकूण लांबी (कि.मी)	०	०	४६.५०	३२.००	२०.००	२०.००	१०.८०	१७.२१
	ब) पूर्ण लांबी (कि.मी)	०	०	४६.५०	३२.००	२०.००	१५.००	१०.८०	१७.२१
६	कमाल क्षमता (द. ल.घ.मी.)	५२.६९	५३.७२	२९.५३	३३.०२	१६.२२	१४.०२	११.२४	१३.७३
७	एकूण लाभ क्षेत्र (हे.)	५८१७	६९०८	९०३४	१६४५४	७०८०	३६७९	३९९४	५२६०
८	पाण्याचा वापर (द. ल.घ.मी.)								
	अ) पिण्यासाठी	.	०.०३१	.	१४.४०	१.३२	२.०१	२.२४	३.७८६
	ब) शेतीसाठी	१.४०	४.९६	१७.३५४	१३.६९	८.९६	९.१९	०	६.४३२
	क) औद्योगिकवापरासाठी	.	.	०	०	०	०	०	०
	ड) वीजनिर्मितीसाठी	.	.	०	०	०	०	०	०
	इ) इतरबाबीसाठी	.	.	०	०	०	१.१६	०	०

संदर्भ : जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन . २०१८

मध्यम प्रकल्प :

नाशिक जिल्हयातील १०० % नद्या नाशिक जिल्हयातच उगम पावलेल्या आहेत. एकही नदी नाशिक जिल्हयाबाहेरून आलेली नाही. बऱ्याचशा नद्यांचा उगम हा सह्याद्री पर्वत रांगेतूनच झालेला आहे. नाशिक जिल्हयातील काही तालुके अवर्षणग्रस्त असल्यामुळे या तालुक्यांना जलसिंचनाची सुविधा मिळावी म्हणून लहान-मोठ्या अनेक धरणांची निर्मिती करण्यात आलेली आहे. त्यापैकी नाशिक जिल्हयात एकूण ०८ मध्यम जलसिंचन प्रकल्प आहेत ते पुढीलप्रमाणे.



**१) हरणबारी :**

तापी खोऱ्यातील मोसम नदीवर नाशिक जिल्ह्यातील सटाणा शहरापासून ३५ कि.मी. अंतरावर अंबापूर गावाजवळ हरणबारी मध्यम प्रकल्प उभारण्यात आलेला आहे. सदर प्रकल्प १९७१ साली सुरु झाला असून १९८२ साली बांधून पुर्ण झाला धरणाचा प्रकार मातीचा असून लांबी १२३६ मी. असून महत्तम उंची ३४ मी. आहे. त्याचे पाणलोट क्षेत्र १२१.६० चौ.कि.मी. आहे. एकूण पाणी साठा ३४.५७८ घनमीटर दशलक्ष घन मीटर इतका आहे. एकूण लाभ क्षेत्र १६४५४ हे. आहे. लागवडी लायक क्षेत्र १२३४० हे. असून सिंचन क्षेत्र ९७२६ हे. इतके आहे. बुडीत क्षेत्र खाजगी क्षेत्र ५५४ हे. इतके आहे. लाभक्षेत्र एकूण क्षेत्र १६४५४ हे. आहे. लागवडी लायक क्षेत्र १२३४० हे. असून सिंचन क्षेत्र ९७२६ हे. इतके आहे. खरीप ७७८२ हे. रब्बी २५०० हे. दु हंगामी १९४३ हे. एकूण १२२२५ हे. प्रकल्पीय पीक क्षेत्र आहे. प्रकल्पीय पाणी वापर खरीप २२.१२ द.ल.घ.मी. रब्बी ५.५४ द.ल.घ.मी. एकूण ४७.६६ द.ल.घ.मी. आहे. तालुका निहाय मुळ सिंचन क्षेत्र मालेगाव ५७९१ हे., सटाणा ३९३५ हे. एकूण ९७२६ हे. इतके आहे. हरणबारी मध्यम प्रकल्प मोसम नदीवर सटाणा तालुक्यातील आंबापूर गावाजवळ बांधण्यात आला आहे. प्रकल्पाची मूळ प्रशासकीय किंमत रुपये १७९.६५ लक्ष असून दिनांक २६/०४/१९६९ रोजी मूळ प्रशासकीय मान्यता प्रदान करण्यात आली होती. त्यानंतर सुधारीत प्रशासकीय मान्यता दिनांक १५/०९/१९८२ रोजी रुपये १८४८.१३ लक्ष रुपये देण्यात आली होती प्रकल्पाचे काम सुरु १९७१ मध्ये सुरु करु सन १९९० मध्ये पूर्ण करण्यात आले प्रकल्पाच्या बुडीत क्षेत्रात आंबापूर, विसापूर व खरड असे एकूण तीन गावे बाधित झाली होती. एकूण ५०७ प्रकल्पग्रस्तांची संख्या होती सर्व खातेदारांचे नवीन पुनर्वसनाचे काम दगडपाडा, अंजदे, जैतापूर येथे पुनर्वसन करण्यात आले आहे.

२) केळझर :

तापी खोऱ्यातील आरम नदीवर नाशिक जिल्ह्यातील सटाणा शहरापासून पश्चिमेस ३५ कि. मी. अंतरावर तताणी गावाजवळ हा मध्यम प्रकल्प बांधण्यात आलेला आहे. ह्या प्रकल्पाचे बांधकाम १९७२ साली सुरु करण्यात आले असून १९८० साली या धरणाचे बांधकाम पूर्ण झाले. ह्या प्रकल्पाचे पाणलोट क्षेत्र ५४.३९ चौ.कि.मी. आहे. धरणाचा प्रकार मातीचा असून लांबी १२३६ मी. असून महत्तम उंची ३२.५० मी. आहे. केळझर प्रकल्पाचे एकूण लाभ क्षेत्र ७०८० हे. आहे. लागवडीलायक क्षेत्र ४५३६ हे. असून सिंचन क्षेत्र ३३९४ हे. इतके आहे. ह्या प्रकल्पाचे तालुकानिहाय मुळ सिंचन क्षेत्र ३३९४ हे. इतके आहे. डावा कालवा लांबी २० कि.मी., वहन क्षमता २.२७ घ.मी./प्र.से. सिंचन क्षेत्र २६० हे. लाभाकिंत तालुका सटाणा आहे. केळझर मध्यम प्रकल्प नाशिक जिल्ह्यात सटाणा तालुक्यातील तताणी गावाजवळ आहे. प्रकल्पाची मूळ प्रशासकीय किंमत रुपये ११८.३२ लक्ष असून दिनांक २७/०८/१९७१ रोजी प्रशासकीय मान्यता मिळाली आहे. त्यानंतर दिनांक १२/०८/१९७५ रोजी सुधारित प्रशासकीय मान्यता रुपये ३४०. १८ लक्ष मिळाली आहे. प्रकल्पाचे काम १९७२ मध्ये सुरु करुन सन १९८५ मध्ये पूर्ण करण्यात आले आहे. प्रकल्पाच्या बुडीत क्षेत्रात एक ही गावठाण बाधित झाले नसल्याने पुनर्वसन करण्याचा प्रश्न उध्दभवला नाही.

३) नाग्यासाक्या :

तापी खोऱ्यातील पांझण नदी वरील नाशिक जिल्ह्यातील नांदगाव शहरापासूनच पश्चिमेस ७ कि.मी. अंतरावर हिंगणवाडी गावाजवळ नाग्यासाक्या मध्यम प्रकल्प बांधण्यात आलेला आहे. धरणाचा प्रकार मातीचा असून लांबी ११४६ मी. असून महत्तम उंची २३.९ मी. आहे. या प्रकल्पाचे पाणलोट क्षेत्र ४५१.२८ चौ.कि.मी. आहे. उपयुक्तसाठा ११.२४ द.ल.घ.मी., मृतसाठा ४. ३८ द.ल.घ.मी. एकूण पाणी साठा १५.६२ द.ल.घ.मी. आहे. बुडीत क्षेत्रात खाजगी क्षेत्र ३४.५० हे. इतके वनक्षेत्र १७० हे. एकूण ४०५.०० हे. एवढे आहे. ३९९४ हे. एवढे एकूण लाभक्षेत्र असून त्यापैकी लागवडी लायक क्षेत्र २८९३ हे. असून सिंचन क्षेत्र २४०० हे. इतके आहे. प्रकल्पीय पीक क्षेत्रात खरीप १२०० हे., रब्बी १२०० हे., एकूण २४०० हे. आहे. प्रकल्पीय पाणी वापरपैकी खरीप ४.५६ द.ल.घ.मी. रब्बी ९.१६ द.ल.घ.मी. एकूण १३.७२ द.ल.घ.मी. आहे. कालवा १) डावा —लांबी ४.५०., कि.मी., वहन क्षमता १.७६ घ.मी./प्र.से. सिंचन क्षेत्र १८८९



हे. लाभाकितं तालुके नांदगाव, मालेगाव २) उजवा—लांबी ६.३०., वहनक्षमता ०.५३ घ.मी./प्र.से. सिंचनक्षेत्र ५११ हे. लाभाकितं तालुका नांदगाव व चांदवड तालुके.

पुनर्वसन :

सदर प्रकल्प हा नाशिक जिल्हयातील नांदगाव तालुक्यामध्ये हिंगणवाडी गावाजवळ पांझण नदीवर बांधण्यात आला आहे. प्रकल्पाची मुळ प्रशासकीय किंमत रुपये १७५.२७ लक्ष असून दिनांक २०/११/१९८२ रोजी मूळ प्रशासकीय मान्यता प्रदान करण्यात आली आहे. त्यानंतर सुधारित प्रशासकीय मान्यता दिनांक ६/११/१९९० रोजी रुपये २०८२.९७ लक्ष रुपयात प्रदान करण्यात आले आहे. प्रकल्पाचे काम सन १९८२ मध्ये सुरु करून १९९४ मध्ये पूर्ण करण्यात आले आहे. प्रकल्पाच्या बुडीत क्षेत्रात नांदूर शिवारातील हनुमानवाडी तालुका नांदगाव ही वाडी अंशतः बाधित झाले आहे एकूण १६५ आदिवासी प्रकल्पग्रस्तांची संख्या आहे. सर्व खातेदारांची नवीन पुनर्वसन करण्याचे काम हनुमानवाडी येथे करण्यात आले आहे.

४) माणिकपुंज :

तापी खोरे व गिरणा उपखोरे विभाग नाशिक माणिकपुंज हा मध्यम प्रकल्प नांदगाव तालुक्यात माणिकपुंज गावाजवळ मन्याड नदीवर बांधण्यात आलेला आहे. या धरणाचे बांधकाम मातीचे असून त्याची लांबी १४७० मी. आहे. उंची ३२.९२ मी. आहे. धरणाचा एकूण पाणीसाठा १४.१ द.ल.घ.मी. असून उपयुक्त पाणीसाठा ९.४६ द.ल.घ.मी. आहे या मध्यम प्रकल्पाचे एकूण लाभक्षेत्र ४१७५ हे. असून लागवडीलायक क्षेत्र ३३५६ हे. आहे व सिंचन क्षेत्र २६८५ हे. आहे आणि याची निर्माण झालेले सिंचन क्षमता १४१० हे. आहे या मध्यम जलसिंचन प्रकल्पाच्या अंतर्गत नाशिक जिल्ह्यातील नांदगाव तालुक्यातील २४१३ हे. इतके क्षेत्र मिळते.

या प्रकल्पासाठी कोणत्याही प्रकारचे पुनर्वसन करावे लागले नाही. प्रवाही सिंचन व उपसा सिंचनाचा लाभ परिसरातील पाणी पातळीत वाढ, शेती पुरक उद्योग, दूध संकलन, अन्नधान्य उत्पादन वाढवून जीवनात बदल झालेला आहे.

५) कश्यपी :

गोदावरी खोऱ्यातील कश्यपी नदीवर नाशिक जिल्हयातील नाशिक शहरापासून ३५ कि.मी. अंतरावर खायद्याची वाडीगावाजवळ कश्यपी मध्यम प्रकल्प उभारण्यात आलेला आहे. सदर प्रकल्प १९७१ साली सुरु झाला असून १९८२ साली बांधून पुर्ण झाला आहे. धरणाचा प्रकार मातीचा असून लांबी १३८० मी. आहे. कश्यपी मध्यम जलसिंचन प्रकल्पाचे पाणलोट क्षेत्र ४६.१० चौ.कि. मी. आहे. प्रकल्पीय सिंचन क्षमता १५७ हे. तर एकूण पाणीसाठी १.८६ टीएमसी आहे.

६) गौतमी गोदावरी :

गौतमी गोदावरी हा मध्यम जलसिंचन प्रकल्प त्र्यंबकेश्वर तालुक्यातील बेज या गावाजवळ गौतमी नदीवर सन २००६ यावर्षी बांधण्यात आलेला आहे. हा प्रकल्प गोदावरी खोऱ्यात येत असून नाशिक पाटबंधारे विभाग या प्रकल्पाची देखरेख करित असतो. या मध्यम प्रकल्पावर कालव्यांदारे सिंचन व्यवस्था होत नाही शेतकऱ्यांना थेट धरणातून पाणी उचलण्याची परवानगी दिली आहे. प्रकल्पाचे पाणलोट क्षेत्र ४१.१८ चौ.कि.मी आहे. तर पाणीसाठा ५३.२१ द.ल.घ.मी. धरणाचा प्रकार ओगी टाईप आहे. याची लांबी ८६९ मी. धरणाची उंची ५९.७५ मी. आहे सिंचनक्षेत्र १९२.७७ हे. आहे. या प्रकल्पाच्या बांधकामामागची कल्पना १८७९.४० द.ल.घ.मी. पाणी साठवणूक करणे होती. त्याचा प्रत्यक्ष वापर १८६७.१५ द.ल.घ.फू. आहे या प्रकल्पाचे पाणी हे गंगापूर धरणातून गोदावरी कालव्याच्यांदारे ६७५१ हे. क्षेत्र सिंचित करण्यासाठी केला जातो.

७) भोजापूर :

भोजापूर हा मध्यम जलसिंचन प्रकल्प सिन्नर तालुक्यातील भोजापूर गावाजवळ संगमनेर तालुक्यातून आलेल्या म्हाळूगी नदीवर बांधण्यात आलेला आहे. हा प्रकल्प १९७२—७३ मध्ये बांधून पूर्ण झालेला आहे. या प्रकल्पाचा समावेश गोदावरी खोऱ्यात होतो. त्याची पाहणी नाशिक पाटबंधारे विभागामार्फत केली जाते. प्रकल्पाचे पाणलोट क्षेत्र १५४ चौ. कि.मी. धरणाचा प्रकार मातीचा असून त्याची लांबी ४८० मी. आहे. असून त्याचे बुडीत क्षेत्र ३३५.३३ हे. इतके आहे. प्रकल्पाचे एकूण लाभ क्षेत्र ५८४५ हे. असून लागवडीलायक क्षेत्र ४५०० हे. आहे व सिंचन क्षेत्र



५००० हे. आहे. या प्रकल्पाच्या बांधकामासाठी १६५.७२ लक्ष इतका खर्च झालेला आहे. भोजापूर मध्यम प्रकल्प अंतर्गत खरीप व उन्हाळी हंगामात सिंचन होत नाही.

८) आळंदी :

गोदावरी खोरे अंतर्गत येणारा आळंदी हा मध्यम प्रकल्प पालखेड धरण समुहात येत असून नाशिक पाटबंधारे विभागातून यांचे कामकाज पाहिले जाते. हा प्रकल्प दिंडोरी तालुक्यात आळंदी नदीवर १९८५ साली बांधण्यात आला आहे. आळंदी मध्यम प्रकल्प हा २७.४८ लक्ष घनमीटर क्षमतेचा आहे. या प्रकल्पाचे क्षेत्र ६२९६ हेक्टर असून कालवे वितरकाची लांबी सुमारे ४६.५ कि. मी. आहे. प्रकल्पाचे पाणलोट क्षेत्र ७४.५९ चौ.कि.मी आहे. प्रकल्पाची सिंचन क्षमता ६२९६ हेक्टर इतकी आहे. लाभ क्षेत्र ९०३४ हेक्टर आहे. तर लागवडी लायक क्षेत्र ७४०८ हेक्टर इतके आहे. धरण हे मातीचे असून त्याची लांबी १५९० मी. आहे.

निष्कर्ष :

जलसंधारण व जिल्हा परिषद यामार्फत राबविल्या जाणाऱ्या या योजनांतर्गत दरवर्षी धरणामध्ये प्रत्यक्ष किती पाणी त्यावर आजवर किती खर्च झाला याची काहीही माहिती संकलित केली जात नाही, किंवा प्रत्यक्ष किती सिंचन झाले साठल्यामुळे यापैकी काही टक्के प्रतिनिधिक (Representative) योजना निवडून त्यांचे उद्दिष्टे साधता मूल्यांकन त्रयस्थ अशासकीय संस्थां मार्फत केले पाहिजे. एवढ्या मोठ्या प्रमाणावर खर्च करून बांधलेल्या धरणात दरवर्षी होणारा साठा व प्रत्यक्ष सिंचन याची आकडेवारी संकलित करून वार्षिक अहवाल प्रसिध्द करण्याची जबाबदारी जलसंधारण विभाग जिल्हा परिषद यांच्यावर सोपविली पाहिजे. याकामात आजवर केलेल्या प्रचंड गुंतवणुकीचा प्रत्यक्ष फायदा किती होत आहे हे पाहण्याची गरज आहे. भूपृष्ठावरील व भूजलावरील प्रत्यक्ष होणाऱ्या सिंचनाचे मापन उपग्रहामार्फत उपलब्ध होणाऱ्या छायाचित्रांच्या (Satellite imageries) सहाय्याने करण्याची आधुनिक व वस्तुनिष्ठ पध्दत वापरल्यास सिंचन क्षेत्राचे योग्य मापन होऊन सर्व सिंचन प्रणालीच्या उपयुक्ततेचे यथार्थ मूल्यामापन होईल.

वरीलप्रमाणे उपाययोजना केल्यास सिंचन व्यवस्थापनाची सद्याची दशा सुधारून एक नवी दिशा प्राप्त होईल आणि केलेल्या प्रचंड भांडवली गुंतवणुकीमधून होणाऱ्या लाभांचे प्रमाण बरेच वाढेल असे वाटते. पाणी वापर संस्था या लोकशाही पध्दतीने कार्यक्षमरितीने चालल्या तर कायम बागायतीखालचे ऊस, केळी वगैरे एकूण क्षेत्र तेवढेच राहिले तरी लाभार्थी शेतकरी यांची संख्या वाढून बहुतेक शेतकऱ्यांना थोड्या-थोड्या क्षेत्रावर नगदी पिके घेता येतील यासाठी सुक्ष्मसिंचन ठिंबक सिंचन थोडक्यात म्हणजे सिंचन लाभाचे समन्यायी वाटप होणे यंत्रणेचा वापर केला तर वाचलेले पाणी हंगामी पिकास वापरता येईल व अर्थनिर्मिती व रोजगार निर्मिती होईल.

कुन्हाड बंदी जलसंधारण कामात साठलेला गाळ काढून शेतात पसरणे व पुर्नभरण क्षमता वाढविणे, माणसांना व जनावरांना पाणी पिण्यासाठी लागणाऱ्या विहीर राखून ठेवणे. या सर्व कामात राहिल हे सर्व कामकाज पाहण्यासाठी आवश्यक अशासकीय संस्थांची मदत घेण्याचा प्रयोग केला पाहिजे. लाभधारकांचे असे सहकार्य लाभले तरच या योजना यशस्वी होतील.

शिफारशी :

बऱ्याच मोठ्या, मध्यम धरणातील पाणी नागरी वस्तीसाठी उद्योगांसाठी वापरले जाते त्यामुळे सिंचनासाठी कमी पाणी उपलब्ध होऊन शहरीग्रामीण संघर्ष वाढत आहे. अशा वापरातून जे प्रदूषित सांडपाणी निर्माण होते त्यापैकी थोड्याच सांडपाण्यावर प्रक्रियाकरून उरलेले पाणी नदीत सोडल्यामुळे बऱ्याचशा नद्यांचे, आणि त्या नद्या ज्या जलाशयात जाऊन मिळतात त्यांचे पाणी प्रदूषित होत आहे. या प्रदूषित पाण्याचा वापर शेतीसाठी या प्रदूषित पाण्याचा वापर पिण्यासाठी केल्यामुळे आरोग्याचे प्रश्न निर्माण झाले आहेत. प्रदूषित पाण्यावर शेती केल्यामुळे प्रदूषित शेतमालाची निर्मिती होते आणि तेथील भूजलाचे ही प्रदूषण होत आहे. निर्माण झालेल्या १०० टक्के सांडपाण्यावर प्रक्रियाकरून त्याचा वापर सिंचनासाठी केला तर सिंचन क्षेत्रात वाढ होईल. प्रदूषित पाण्यावरील प्रक्रिया होण्यासाठी कायद्याची अंमलबजावणी चोख झाली पाहिजे.





संदर्भसुची :

- १) नाशिक जिल्हा आर्थिक समाजिक समालोचन २०१८-१९
- २) महाराष्ट्र जल व सिंचन आयोग अहवाल १९९९ खंड -१
- ३) सिंचन स्थिती दर्शक अहवाल २०१९
- ४) जलचिंतन, सुधीर भोंगळे
- ५) विविध संकेतस्थळे

FOUNDER



महात्मा गांधी विद्यामंदिर संचलित,
महाराजा सयाजीराव गायकवाड महाविद्यालय,
मालेगांव कैंप, जिला नासिक (महाराष्ट्र)
हिंदी विभाग एवं
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली की
भारतीय समाजविज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित



द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है की श्री./श्रीमती/डॉ.प्रा. मिनाक्षी बबनराव काळे
ने दिनांक २८-२९ फरवरी २०२० को भाषा शिक्षण और रोजगार के अवसर विषय पर आयोजित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में
सक्रिय सहभाग लिया एवं हिंदी भाषा अबुवाह में रोजगार के विषय पर प्रमुख अतिथि / सत्राध्यक्ष / विषय प्रवक्ता /
अवसर
विशेष वक्ता / आलेख वाचक / प्रतिभागी के रूप में उपस्थित रहकर संगोष्ठी की गरिमा प्रदान की। इतद्धर्त प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

डॉ. जालिंदर जंगले
संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी

डॉ. चंद्रशेखर निकम
उपप्रधानाचार्य

डॉ. दिनेशजी शिरुडे
प्रधानाचार्य

ISSN - 2321 : 2160

International Peer-Reviewed Referred Journal
(Formerly in the list of UGC Approved Journals No. 47772)



AYUDH

Volume-1

Special Issue on

भाषाशिक्षण और रोजगार के अवसर

Impact Factor : 3.1

February 2020

GUEST EDITOR

DR. JALINDAR INGLE

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI

DR. DINESH SHIRUDE

PRINCIPAL

MSG COLLEGE
MALEGAON CAMP
DIST. NASHIK, MAHARASHTRA

Ayudh Publication

For -
Book Publish - ISBN (Approved by - MHRD, Govt. of India)
Ayudh Journal - ISSN 2321 : 2160 (Since May-2013)
Surabhi Journal - ISSN 2349 : 4557 (Since June-2014)

सहयोग राशि :

- * एक प्रति : 100/-
- * व्यक्तिगत पंचवर्षीय : 5000/-
- * संस्थागत पंचवर्षीय : 6000/-

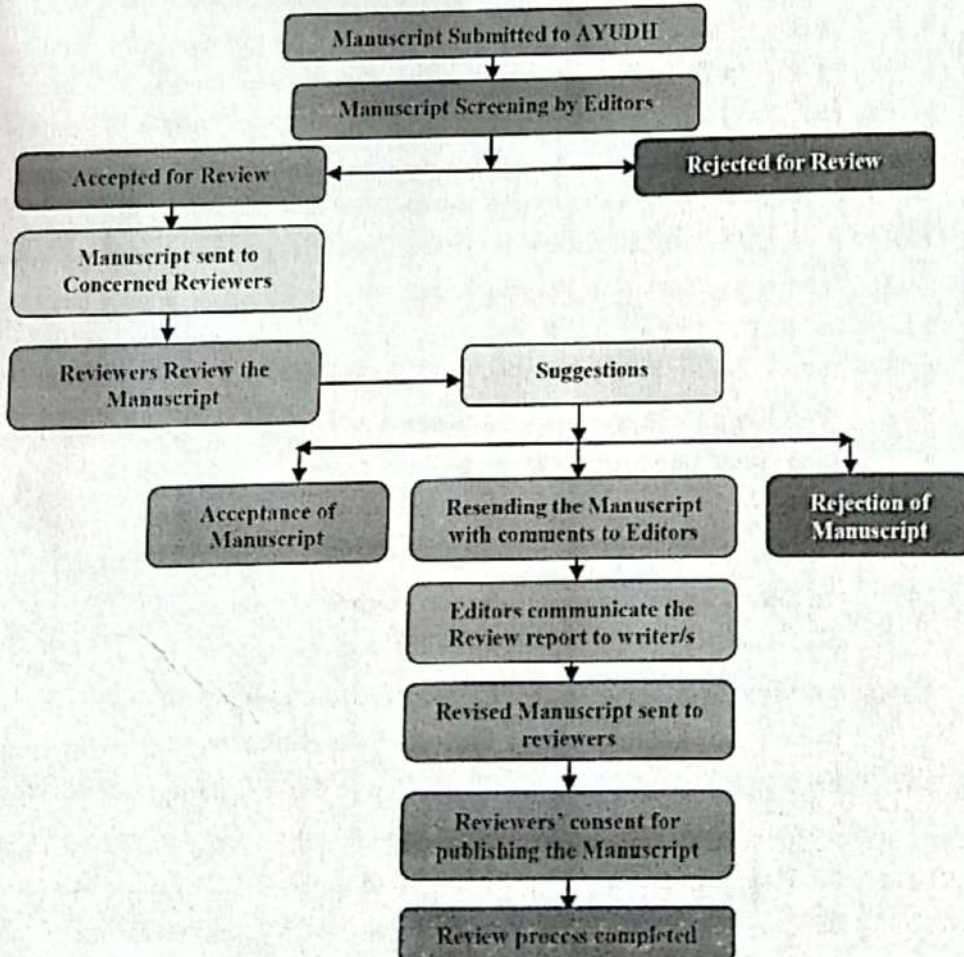
संपादन/संचालन :

- पत्रिका अवैतनिक और अव्यावसायिक है ।
- रचनाकार की रचनाएँ उसके अपने विचार हैं ।
- संशोधन प्रपत्र व आलेखों से विशेषज्ञ समीक्षा समिति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।
- संशोधन प्रपत्र व आलेखों पर कोई आर्थिक मानदेय नहीं दिया जाता ।
- लेखकों, सदस्यों एवम् मित्रों के आर्थिक सहयोग से

Contact :

Ayudh Publication,
Bhavnagar, Gujarat
ayudh2013@gmail.com
www.ayudhpublication.com
9428 34 36 35 / 91069 42482

Peer Review Process 1st Phase



The same process will come in effect in 2nd phase and then finally paper goes for publication after double blind peer-reviewed process.

INDEX

संपादकीय		
1.	हिंदी पत्रकारिता का योगदान डा. डॉ. जतिहर इंगले	1
2.	भाषा, वैयक्तिकरण, अनुवाद : एक रोजगार क्षेत्र डा. मा. ना. गायकवाड	3
3.	भाषा अध्ययन और सिनेमा डा. अनंत केदार	6
4.	भाषा शिक्षण और दूरदर्शन डा. शरद भा. कोलगे	10
5.	भाषा शिक्षा और सिनेमा प्रा. रविंद्र पुंजाराम टाकरे	12
6.	हिंदी भाषा (शिक्षण) एवं रोजगार के अवसर डा. मोहन चव्हाण	14
7.	भाषा शिक्षण और जनसंचार माध्यम डा. पंडित बन्ना	16
8.	हिंदी भाषा के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक मिडिया में रोजगार के सुअवसर प्रा. डा. वी. जी. राठोड	18
9.	भाषा शिक्षण और रोजगार के अवसर डा. योगिता दत्तात्रय घुमरे (उशिर)	20
10.	हिंदी भाषा और रोजगार की संभावनाएं डा. वास्वीक डी. सूर्यवंशी	22
11.	भाषा शिक्षण और अनुवाद : रोजगार के विविध अवसर डा. बबन चौरे	25
12.	हिंदी भाषा शिक्षण और रोजगार कि विविध संभावनाएं प्रा. डा. वनिता अंबक पवार - निकम	27
13.	हिंदी मीडिया : रोजगार प्राप्ति के अवसर प्रा. डा. योगेश विठ्ठल दाणे	30
14.	जनसंचार माध्यम और रोजगार मंनका त्रिपाठी	34
15.	हिंदी काव्यानुवाद में निर्मित अनुवाद की समग्र्याएँ व समाधान (विशेष संदर्भ : याचाराव मंडावी का 'पाखर' भगती काव्य संग्रह) गिरिदे टिलीप लक्ष्मण	37
16.	हिन्दी भाषा और रोजगार के विविध आयाम डा. लोकोश्वर प्रसाद सिन्हा	40
17.	भाषा शिक्षण और रोजगार की विविध संभावनाएं प्रा. डा. सत्यद अमर फकिर	43
18.	भाषा शिक्षण के उपकरण डा. जतिहर इंगले	45
19.	समकालीन कविता में गुम-चेतना की अभिव्यक्ति डा. रॉय जोसफ	47
20.	भाषा शिक्षण और पत्रकारिता प्रा. श्रीमती बहगे वृषारती रंगनाथ	51
21.	भाषा शिक्षण और अनुवाद श्री शिरगाठ सुदाम शंभ	53
22.	भाषा शिक्षण और अध्यापन के सामान्य सिद्धांत	

	सहा. प्रा. शेवाळे यज्ञायम भवन	56
23.	भाषा शिक्षण और पत्रकारिता : एक विवेचन सहा. प्रा. माळवे सतीश मधुकर	59
24.	हिंदी भाषा शिक्षण और रोजगार की विविध संभावनाएँ डॉ. संजय म. महेर	63
25.	हिंदी भाषा शिक्षण और रोजगार के अवसर डॉ. रफ़िद नज्जदुद्दीन तहसिलदार	66
26.	भाषा शिक्षण और अनुवाद प्रा. सविता प्रतापम तोडमल	68
27.	भाषा शिक्षण और रोजगार की विविध संभावनाएँ डॉ. योगिता शिरे प्रा. डॉ. अविता जेरे (भापरे)	70
28.	रोजगारोन्मुख हिंदी : चुनौतियाँ और संभावनाएँ प्रा. बालाजी सूर्यवंशी	72
29.	हिंदी भाषा और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया डॉ. जानिंदर इंगले	75
30.	भाषा शिक्षण की सामाजिक आवश्यकता डा. नामगवा के	78
31.	भाषा शिक्षण और रोजगार के अवसर डॉ. अनिल काळे	81
32.	भाषा शिक्षण और समाज माध्यम डॉ. भावना आर. केशवाला	85
33.	भाषा और पत्रकारिता डॉ. शशि माळुंघे	88
34.	"भाषा शिक्षण और रोजगार के अवसर" श्रुति ए. मोनाशी	91
35.	हिन्दी भाषा शिक्षण में रोजगार के अवसर काजल डी. मूठी	94
36.	भाषा शिक्षण की सामाजिक अनिवार्यता सतीष एम. रावत	96
37.	भाषा शिक्षण और मिनेमा प्रा. दिपक शिवाजी आहिरे	99
38.	भाषा शिक्षण और पत्रकारिता लक्ष्मी बाकेनाल यादव	101
39.	अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्रा. डॉ. दिनीपकुमार रामराव गुंजरगे	105
40.	भाषा शिक्षण और रोजगार की विविध संभावनाएँ प्रा. कैलास काशिनाथ बच्छाव	108
41.	भाषा शिक्षण और रोजगार की संभावनाएँ प्रा. डॉ. जितेंद्र पाटील	110
42.	भाषा शिक्षण : रोजगार की उपलब्धियाँ प्रा. डॉ. गुरुदत्त जी. राजपूत	113
43.	हिंदी भाषा अनुवाद में रोजगार के अवसर प्रा. काळे मिनाश्री बबनराव	115
44.	आधुनिक युग में हिंदी के क्षेत्र में रोजगार के असीम अवसर एवं संभावनाएँ डॉ. रंजीत कुमार	121
45.	रोजगारोन्मुख हिंदी भाषा साहित्य - शिक्षण- प्रशिक्षण का महत्व, चुनौतियाँ एवं समाधान डॉ. सुनीता साहू	125
46.	भाषा शिक्षण और बाल मिनेमा ('तारे जमीन पर' के संदर्भ में) तपामे संदिप दामू	133

हिंदी भाषा अनुवाद में रोजगार के अवसर

प्रा.काळे मिनाक्षी बबनराव

एम.ए., बी.एड., नेट-सेट (हिंदी)

मराठा विद्या प्रसारक समाज,

कला व वाणिज्य महाविद्यालय,

मोयगांव, ता.मावेगांव, जि.नाशिक

प्रस्तावना :

मनुष्य जाति के एक दूसरे के संपर्क के लिए भाषा सीखना जरूरी है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन की बात विचार दूसरों तक पहुँचा सके। विचारों को व्यक्त करने का एक माध्यम है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है। भाषा को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए लिपियों की सहायता लेनी पड़ती है। एक भाषा दो-तीन लिपियों में लिखी जाती है और अधिक भाषा एक ही लिपि में लिखी जाती है।

जैसे : 1) पंजाबी भाषा- गुरुमुखी और शहमुखी लिपि में लिखी जाती है।

2) संस्कृत हिंदी मराठी नेपाली देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

भाषा में विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। सभी भाषा उपयोग में लायी जाती हैं। सभी भाषा उपयोग में लायी जाती हैं। अगर आपको भाषा का ज्ञान नहीं तो आप कुछ पढ़ नहीं पाएंगे, लिख नहीं पाएंगे जिसे आप अधिकसे अधिक तकनीकों का एवं सुविधाओं का लाभ नहीं ले सकते। यदि आप कुछ कहना चाहते हैं तो भाषा का ज्ञान होना जरूरी है। पशु-पक्षी, मानव यहाँ तक की कम्प्यूटर की भी अपनी एक भाषा होती है।

भाषा की उत्पत्ति :

जब से मनुष्य ने बोलना आरम्भ किया, सीखना आरम्भ किया तब से भाषा की उत्पत्ति मानी जाती है। संस्कृत के भाषा धातु से भाषा की उत्पत्ति हुई जिनका अर्थ है बोलना। सबसे प्राचीन संस्कृत भाषा को माना जाता है। संस्कृत भाषा ईसा से पहले 5000 साल पहले से बोली जाती है। 1000 ई. के आसपास अपभ्रंश से ही हिन्दी का जन्म हुआ। अपभ्रंश को हिन्दी भाषा की जननी कहा जाता है। हिन्दी भाषा का जन्म 1000 ई. से हुआ। भारत की नदि विशेष अथवा उसके क्षेत्र को सिंधु कहा जाता था। भारत में जब ईरानी लोग आये तो वे 'स' को 'ह' अक्षर से उच्चारण करने लगे और सिंधु को हिंदु कहने लगे। हिन्दी भाषा तब से प्रचलित हुई।

भाषा का स्वरूप एवं परिभाषा :

'भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित तथा यादृच्छिक ध्वनि प्रतिकों की वह अवस्था है जिसे द्वारा मनुष्य विचारों का आदान प्रदान करता है।'

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज में उत्पन्न होता है और वही उसकी मृत्यु होती है। वही उसका अस्तित्व बनता है। समाज में रहने के कारण मनुष्य को एक दूसरे के साथ हमेशा विचारों का आदान करता है। कभी उसे अपने विचारों को प्रकट करने के लिए वाक्यों की आवश्यकता तो कभी संकेतों की

आवश्यकता पड़ती है। हाथ से संकेत, आँधे टेडी करना, खॉसना गहरी गॉस लेना आदि अनेक प्रकार के साधनों से अपनी अभिव्यक्ति करता है। पाँचों ज्ञानेंद्रियों से किन्हीं भी प्रकार अपनी बात कही जा सकती है।

भाषा के विभिन्न रूप :

जीवन के विभिन्न व्यवहारों के अनुरूप भाषा के प्रयोजनों की तलाश अनिवार्य है। भाषा सृजनशील है। भाषा की पहचान अब केवल कविताओं या कहानियों तक सीमित नहीं बल्कि रोजी रोटी का माध्यम बनने की विशिष्टताओं के साथ भाषा का नय रूप सामने आया है। वे हैं वर्गभाषा, तकनीकी भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा संपर्क भाषा, साहित्यिक भाषा बोलचाल की भाषा मानक भाषा आदि।

भाषा का उद्देश्य :

- 1) भाषा शिक्षण का उद्देश्य है भाषा की समझ और अभिव्यक्ति विकास करना है।
- 2) जानार्जन के साथ-साथ भावों का विस्तार भाषाई कौशल में वृद्धि तथा प्रेषणीयता।
- 3) भाषिक तत्त्वों, साहित्यिक विधाओं विषयवस्तु रचनाकार्य के विविध रूप का बोध कराना है।
- 4) भाषा के अनेक कौशल हैं सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। भाषा शिक्षण से व्यक्ति सुनकर समझ सकता है, बोल सकता है, पढ़ सकता है और लिख सकता है इसलिए भाषा शिक्षण आवश्यक है।
- 5) साहित्य का रसास्वादन करना, लेखक या कवि के भावों तथा विचारों को समझना।
- 6) लेखनकार्य में मौलिकता लाना, अपने लेखन में प्रभाव उत्पन्न करना, बोली में प्रभाव डालना।
- 7) उच्चारण वर्तनी की ज्ञान देना।

भाषा सीखने की आवश्यकता :

किन्हीं भी देश का नागरिक होने के हेतु हमारा फर्ज बनता है की हमें उस देश की भाषा और संस्कृति का ज्ञान हो। भाषा का प्रभाव संसार में सभी जाति, धर्म, क्षेत्र आदि के लोगों पर पड़ता है। भाषा अध्ययन से हम अपने अनुभव इच्छाएं प्रश्न उत्तर आदि एक दुसरे तक पहुँचाते हैं। यात्रा देशाटन के समय हमें अन्य भाषाओं के ज्ञान होने का महत्व पता चलता है। मातृभाषा के साथ अन्य भाषा सीखने की भी आवश्यकता है। दूसरी भाषा सीखने से हमारे व्यक्तित्व में निखार आता है।

भाषा शिक्षण और अनुवाद :

अनुवाद एक भाषिक कला है। सामान्य अर्थ में एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना अनुवाद है। यहाँ कथन और अभिव्यक्ति का माध्यम है भाषा। अनुवाद में ध्वनि, रूप, अर्थ, शब्द आदि दृष्टी से भाषा की तुलना की जाती है। अनुवादक को स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा की प्रकृति संरचना, विविध भाषिक तथा व्याकरणिक स्तर विभिन्न शैलियों का सम्पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। भाषाही वह जीवन ज्योति है जो मानव को मानव में जोड़ती है। विचारों के आदान-प्रदान के साथ-साथ परंपरा, संस्कृति एवं विश्वासों को समझने का माध्यम है। अनुवाद विविध भाषाओं एवं विविध संस्कृतियों से साक्षात्कार करानेवाला साधन है। अनुवाद उतना ही प्राचीन है जितनी की भाषा।

भाषा और अनुवाद का भविष्य परस्पर अन्योन्याश्रित है। किसी की भाषा से अनुवाद करने समय अनुवाद में सरलता होनी चाहिए। आधुनिक युग में भाषा अनुवाद की अतिआवश्यकता है। अनुवाद पूर्णतः

भाषा पर आधारित है, इसलिए भोलानाथ तिवारी जी ने अनुवाद को भाषान्तर कहा है | एक भाषिक क्रिया होने के नाते अनुवाद का भाषा से नहीं भाषा विज्ञान से गहरा संबंध है |

अनुवाद का अर्थ परिभाषा एवं क्षेत्र :

अर्थ :

अनुवाद एक भाषिक क्रिया है, एक भाषा दूसरी भाषा में भाषान्तर करने की प्रक्रिया को अनुवाद कहते हैं | भारत जैसे बहुभाषा देश में अनुवाद प्राचीन काल से चली आ रही प्रक्रिया है |

परिभाषा :

1) भोलानाथ तिवारी : किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दूसरी भाषा में भाषान्तर करना अनुवाद है |

थवा

एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासम्भव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है |

2) देवेन्द्रनाथ शर्मा : विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना अनुवाद है |

अनुवाद के क्षेत्र :

आज दुनिया में अनुवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है | आधुनिक युग में जितने भी क्षेत्र हैं सबके सब अनुवाद के क्षेत्र हैं, चाहे न्यायालय हो या कार्यालय, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी हो या शिक्षा, संचार हो या पत्रकारिता साहित्य का हो या सांस्कृतिक संबंध इन सभी क्षेत्रों में अनुवाद किया जा रहा है | सभी क्षेत्र में भाषा का अनुवाद महत्त्वपूर्ण है |

न्यायालय :

अदालतों की भाषा प्रायः अंग्रेजी में होती है, इनके मुकदमों के लिए आवश्यक कागजात प्रादेशिक भाषा में होते हैं | इस वातावरण में अंग्रेजी और प्रादेशिक भाषाका बारी-बारी से अनुवाद किया जाता है |

सरकारी कार्यालय :

आजादी से पूर्ण हमारे सरकारी कार्यालयों की भाषा अंग्रेजी थी | हिंदी के राजभाषा के रूप में मान्यता मिलने के साथ सरकारी कार्यालयों के अंग्रेजी दस्तावेजों का हिंदी अनुवाद जरूरी हो गया |

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी :

देश विदेशों में हो रहे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के गहन अनुसंधान के क्षेत्र में तो मारा लेखन कार्य उन्हीं की अपनी भाषा में किया जा रहा है | इस अनुसंधान को विश्वपटलपर रखने के लिए अनुवाद ही एकमात्र साधन है | इसके माध्यम से नई शोध को आसानी से सभी तक पहुँचाया जा सकता है | इस दृष्टि से शोध एवं अनुसंधान के क्षेत्र में अनुवाद बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है |

शिक्षा :

भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश के शिक्षा क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता है | शिक्षा का क्षेत्र अनुवाद के बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता | देश की प्रगति के लिए परिचयात्मक साहित्य, ज्ञानात्मक साहित्य एवं वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद बहुत जरूरी है |

जनसंचार :

जनसंचार के क्षेत्र में अनुवाद का प्रयोग अनिवार्य होता है। इनमें मुख्य है समाचार-पत्र, रेडिओ, दूरदर्शन। ये अत्यंत लोकप्रिय हैं और हर भाषा प्रदेश में इनका प्रचार बढ रहा है। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में से एक।

साहित्य :

साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद वरदान साबित हो चुक है। प्राचीन और आधुनिक साहित्य का परिचय पाठक अनुवाद के माध्यम से पाते है। 'भारतीय साहित्य' की परिकल्पना अनुवाद के माध्यम से ही संभव हुई है। विश्वसाहित्य का परिचय हम अनुवाद के माध्यम से पाते है।

अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध :

आंतरराष्ट्रीय क्षेत्र अनुवाद का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों का संबाद मौखिक अनुवादक की महायता से ही होता है। प्रायः सभी देशों में एक दूसरे देशों के राजदूत रहते हैं और उनके कार्यालय भी होते हैं। राजदूतों को कई भाषाएँ बोलने का अभ्यास कराया जाता है। इस प्रकार अन्तरराष्ट्रीय मैत्री एवं शांति बनाए रखने की दृष्टि से अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है।

संस्कृति :

अनुवाद को संस्कृतिक सेतु कहा गया है। भाषाओं की एकता मनुष्य के एक दूसरे से अलग नहीं कर सकती, उसे कमजोर, ज्ञान की दृष्टि से निर्धन और संवेदना शून्य भी बनाती है। 'विश्व बंधुत्व की स्थापना' एवं 'राष्ट्रीय एकता' को बरकरार रखने की दृष्टि से अनुवाद एक तरह से सांस्कृतिक सेतु की तरह महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

21 वीं सदी में अनुवाद का महत्व :

21 वीं शताब्दी में अनुवाद एक अनिवार्य और आवश्यक साधन बन गया है। भारत जैसे बहुभाशी देश में अनुवाद को अधिक महत्व दिया गया है। भारत में अनेक प्रदेश होने के कारण हर एक प्रदेश की भाषा अलग-अलग है, इसीलिए जनसमुदायों के बीच संप्रेषण के संवाहक के रूप में अनुवाद अधिक महत्वपूर्ण साधन है। मनुष्य अनुवाद पर आश्रित है यदि आज के युग को अनुवादक युग कहा जाए तो भी चल सकता है। धर्मदर्शन, साहित्य शिक्षा, विज्ञान तकनीक, वाणिज्य व्यवसाय, राजनीति कूटनीति आदि सभी क्षेत्रों में अनुवाद का संबंध रहा है। अनुवाद मानव की मौखिक एकता की व्यक्ती चेतना एवं विश्व चेतना के अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है। अतः 21 वीं शताब्दी में अनुवाद ने अपनी संकुचित परिधि को लाँघकर प्रशामन विज्ञान प्रौद्योगिकी तकनीकी, चिकित्सा, कला, संस्कृति, अनुसंधान, पत्रकारिता, जनसंचार, दूरस्थ शिक्षण, व्यवसाय आदि हर क्षेत्र में प्रवेश कर यह साबित कर दिया है की अनुवाद समकालीन जीवन की अनिवार्यता है।

इस प्रकार अनुवाद का महत्व निम्नलिखित तीन प्रकार के अध्ययन में है।

- 1) भारतीय साहित्य का अध्ययन।
- 2) आंतरराष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन।
- 3) तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन।

अनुवाद के प्रकार :

- 1) गद्य पर आधुनिक प्रभेद :
 - गद्यानुवाद
 - पद्यानुवाद



Mahatma Gandhi Vidyamandir's
Karmaveer Bhausaheb Hiray Arts, Science & Commerce College,
Nimgaon, Tal. Malegaon, Dist. Nashik, Maharashtra.

NAAC Accredited 'C' Grade [CGPA: 1.93]

Sponsored by

Savitribai Phule Pune University, Pune

A National Conference on

Folk Literature & Folk Media (लोकसाहित्य आणि लोक माध्यमे)

13-14 February, 2020

CERTIFICATE

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Mrs/ Minakshi Babanrao Kale of MVP's Arts and Com. college Soygaon-Malegaon has actively participated/delivered lecture as a Resource Person/ Chaired the Session/ Presented Paper entitled लोकसाहित्य विमर्शः खानदेश की आहेशणी बोली in the National Conference on Folk Literature & Folk Media (लोकसाहित्य आणि लोक माध्यमे) Organised by P.G.Department of Marathi


Prof. A. G. Nerkar
Coordinator


Dr. V. D. Suryawanshi
Co-coordinator


Dr. Kalyan Kokane
Vice-Principal


Dr. Subhash Nikam
Principal/Convener



MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

VIDYAWARTA[®]

SPECIAL ISSUE January 2019

Maratha Vidya Prasarak Samaj's

ARTS AND COMMERCE COLLEGE, KHEDGAON

Tal.Dindori, Dist.Nashik - 422 205



TWO DAYS NATIONAL SEMINAR ON

**“Economic and Political
Influence of Asian
Countries : India & China**

Dated : 18th and 19th January, 2019

Guest Editor
Dr.D.N.Kare

Sponsored by

**BCUD,
Savitribai Phule Pune University, Pune**

Organized by

Department of Economics & Politics





MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

V I D Y A W A R T A[®]

SPECIAL ISSUE January 2019

Special Issue :
**Economic and Political Influence of Asian
Countries : India & China**

**UGC Approved Journal No. 41012
January, 2019**

Chief Editor

Mr. Bapuji Gholap
Harshwardhan Publication Pvt. Ltd.
At Post Limbaganesh,
Tal. & Dist. Beed-431 126

Guest Editor

Dr. D. N. Kare
Principal
MVP Samaj's
Arts and Commerce College, Khedgaon,
Tal. Dindori, Dist. Nashik

Executive Editor

Prof. Smt. Y.B.Garud
MVP Samaj's
Arts and Commerce College,
Khedgaon,
Tal. Dindori, Dist. Nashik

INDEX

Sr. No.	Topic	Researcher	Page No.
1	भारत-चीन परराष्ट्रीय धोरण वाटचाल	प्रा.अभिनव संपत पोटे	1
2	भारत चीनचा तुलनात्मक आढावा	प्रा.डॉ.सुनली प. उगले	5
3	चीन आणि सार्क देश	प्रा.डी.डी.ठाकरे	16
4	भारत व असियान संघटना	डॉ.डी.एन.कारे	24
5	भारताच्या दृष्टीने हिंदी महासागराचे सामरिक महत्त्व आणि चीनची भूमिका	प्रा.भिमराज गायकवाड	29
6	सीमावादाचे भारत व चीनवरील परिणाम	प्रा.जे.एल.पगारे	33
7	भारत आणि चीन आशियाई देशावर आर्थिक आणि राजकीय प्रभाव	प्रा.जगताप संदीप शांताराम	38
8	भारत चीन संबंध	प्रा.डॉ.पंकज निकम प्रा.डॉ.मनोज जगताप	42
9	भारत - चीन संबंध	डॉ.व्ही.डी.कापडी प्रा.सतीश सुभाष कावळे	46
10	भारत चीन संबंधाचे बदलते पैलू	डॉ.लंबोळे गणेश मनोहर	52
11	भारत व चीन आर्थिक व राजकीय संबंध	डॉ.मनिषा के. आहरे	55
12	भारत आणि चीनची आशियातील भूमिका	प्रा.संजय अ. मराठे	59
13	भारत चीन संबंध	कु.निकिता लक्ष्मण गांगुर्डे	67
14	भारत आणि चीन यांच्यातील तुलना आणि आव्हाने	डॉ.अमोल ए. गायकवाड प्रा.डॉ.एच.एम.क्षीरसागर	70
15	सार्कची कार्यप्रणाली व इतर देश	प्रा.कृष्णा रावा पाडवी	75
16	चीन संबंधाचे बदलते स्वरूप आणि दक्षिण आशिया	प्रा.राजेंद्र विश्वनाथ पवार	81
17	दक्षिण आशियातील भारत आणि चीन देशातील अर्थव्यवस्था	डॉ.डी.डी.वाळके	86
18	भारतीय अर्थव्यवस्था व चीनची अर्थव्यवस्था: एक अभ्यास	प्रा.डॉ.गोरक्षनाथ रामदास पिंगळे	93
19	भारत आणि चीनची आशियामधील भूमिका	प्रा.अरूण अंबादास पोटे	99
✓20	डोकलाम समस्या आणि भारत चीन संबंध	प्रा.पी.डी.गोणारकर	105
21	हिंदी महासागराचे भूराजकारण आणि चीनची उपस्थिती	प्रा.श्रीमती सुवर्णा पी. धामणे	110
22	भारत-चीन संबंध	प्रा.आर.जे.निकम	116
23	भारत आणि चीन : आशिया देशावरील प्रभाव	प्रा.शशिकांत एस. सांगळे	120
24	भारत चीन सीमा वाद	कु.स्वाती लक्ष्मण भोईटे	124

डोकलाम समस्या आणि भारत-चीन संबंध

प्रा.पी.डी.गोणारकर

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख

मविप्र कला व वाणिज्य महाविद्यालय सोयगाव

आशियातील भारत, चीन आणि भूतान या तीन देशांची सीमारेषा या डोकलाम या विवादीत प्रदेशात येऊन मिळते. जून २०१७ मध्ये डोकलाम चा प्रदेश अचानक चर्चेत आला .या भागात चीननं रस्ता बांधायला घेतला आणि चीनच्या या कृतीस 16 जून 2018 रोजी भारताने आक्षेप घेतला.भूतान आणि चीन हे दोन्ही देश डोकलामवर आपापला दावा सांगतात. भारत भूतानच्या दाव्याचं समर्थन करतो.हा प्रदेश भारतात डोकलाम म्हणून ओळखला जातो. चीनमध्ये यालाच डोंगलॉंग या नावानं संबोधलं जातं. डोकलाममधून सैन्य हटविण्यास दोन्ही देशांनी 28 ऑगस्ट रोजी सहमती दर्शविली. मात्र या कार्यवाहीसंदर्भात दोन्ही देशांची मतं वेगवेगळी आहेत.भारतीय परराष्ट्र मंत्रालयाच्या म्हणण्यानुसार, 'दोन्ही देशात करार झाले होते आणि त्याला अनुसरूनच दोन्ही देश डोकलाममधून सैन्य हटविण्यास तयार झाले.' चीननं मात्र, 'जे भारतीय सैन्य आमच्या क्षेत्रात घुसखोरी करत होते त्यांनी माघार घेतली', असं म्हटलं आहे.भारत आणि चीनमधील संबंध नजीकच्या काळात ताणले गेले. विशेषतः पाकिस्तानमधील चीनची वाढती गुंतवणूक बघता त्यात भर पडली. सीमेवरच्या या तणावाचं वार्ताकन करताना दोन्ही देशांच्या माध्यमांनी आक्रमकता दाखविली.

'डोकलाम' चीन -भूतान व भारतचा संघर्ष केंद्र :-

सध्या सिक्किममध्ये भारत-चीनदरम्यान 220 किमीची सीमा आहे. यातील सर्व भागात शांततेचं वातावरण आहे. पण ज्या भागात चीन आणि भारताची सीमा भूतानला जोडली आहे, त्या भागावरून उभय देशांमध्ये तणावाची परिस्थिती आहे. भारत-भूतान दरम्यान सिक्किममध्ये 32 किमीची सीमा रेषा आहे. जवळपास 50 वर्षांपूर्वी म्हणजे 1967 मध्ये भारतीय लष्कराने सिक्किममध्ये चीनी सैन्याला धुळ चारली होती. त्यानंतर चीनकडून सिक्किमच्या भागात कधीही घुसखोरी झाली नाही. पण सध्या या तिन्ही देशांचं ट्रायजंक्शन असलेल्या डोकलाममध्ये तणावाची परिस्थिती आहे.हि परिस्थिती निवळणे हेच सर्वांच्या हिताचे आहे.

चीन व भूतान यांच्यात राजनैतिक संबंध नाहीत. चीनचा आपल्या सर्व शेजारांप्रमाणे भूतानशीही सीमावाद आहे. चीनने क्विंग साम्राज्य आणि ब्रिटनमधील सव्वाशे वर्षांपूर्वीच्या कराराचा हवाला देऊन डोकलाम पठारावर दावा सांगितला आहे. १९८४ पासून हा वाद सोडवण्यासाठी चर्चा सुरू असली तरी चीनने मांडलेला तोडगा

भूतानला मान्य नाही. परस्पर सहमतीशिवाय चीनने वादग्रस्त सीमाभागात कुठलाही बदल करायचा नाही, असे चीन आणि भूतानमध्ये ठरले आहे. गेल्या वर्षी जून महिन्याच्या उत्तरार्धात चीनने डोकलाम भागात घुसखोरी करून रस्त्याचे काम सुरु केले. भूतानच्या संरक्षणासाठी कटिबद्ध असलेला भारत त्यापायी बलाढ्य चीनशी वाकड्यात शिरणार नाही, असा चीनचा कयास असावा. या निमित्ताने भारत आणि भूतानमध्ये दुरावा निर्माण करून भूतानला भारताच्या हस्तक्षेपाशिवाय चीनशी स्वतंत्र संबंध निर्माण करण्यास भाग पाडायचा चीनचा अंदाज मात्र साफ चुकला. चीनची घुसखोरी लक्षात येताच भारताने सिक्कीमहून कुमक पाठवून चिनी पथकाला हटकले. त्यानंतर चीनने त्या भागात सैनिकांची तुकडी पाठवली. तिला प्रतिरोध करण्यासाठी आणि संभाव्य चिनी आगळिकीविरुद्ध खबरदारी म्हणून भारतानेही आजूबाजूच्या प्रदेशांत सैनिकांची जमवाजमव केली. तब्बल ७४ दिवस दोन्ही देशांचे सैन्य समोरासमोर उभं होतं. चीनच्या वृत्तमाध्यमांनी युद्धखोरीची भाषा सुरु केली. भारताने संयम राखला असला तरी माघार घेतली नाही. अखेरीस दोन्ही देशांनी समंजसपणा दाखवत चर्चेद्वारे हा प्रश्न तात्पुरता सोडवला. भारत आणि भूतानमधील मैत्री अभेद्य राहिली.

काय आहे नेमकं प्रकरण?

डोकलाम मधून जाणारा रस्ता बांधण्याच्या चीनच्या प्रयत्नाला 16 जून 2017 मध्ये भारताने विरोध केला. भारतीय सैन्याने यात हस्तक्षेप करत रस्त्याचं बांधकाम थांबवलं. याला प्रत्युत्तर म्हणून चीनच्या सैन्याने भारतीय सैन्यदलाची एक लहान चौकी उद्ध्वस्त केल्याचं म्हटलं जातं. भारताच्या ईशान्येकडचं राज्य सिक्कीम राजकीयदृष्ट्या महत्त्वाचं आहे. तिथूनच डोकलामचं पठार जवळ आहे. इथूनच भूतानची सीमारेषा जाते. हिमालयाच्या कुशीत वसलेल्या या देशाचे चीनबरोबर राजनैतिक संबंध नसले तरी या देशाचे भारतासोबत घनिष्ठ संबंध आहेत. भारतीय सैन्य आणि राजनैतिक संबंधाचा त्यांना फायदा होत आला आहे. दोन्ही देशांनी 2007 मध्ये मैत्री करार केला होता. काही आठवडे चाललेल्या या बोला चालीनंतर भारत- चीन संबंध ताणले गेले. राष्ट्रीय सुरक्षा सल्लागार अजित डोवाल यांनी 27 जुलै रोजी ब्रिक्स सुरक्षा समंलेनाच्या पार्श्वभूमीवर चीनच्या राष्ट्रीय सुरक्षा सल्लागारांची भेट घेतली. डोकलाम वादावर उपाय निघण्याची चिन्हं दिसत असताना या बैठकीतून फारसं काही सकारात्मक समोर आलेलं नाही. सूत्रांच्या मते, चीनने जेव्हा चुंबी खोऱ्यात याटुंगमध्ये डोकलाम परिसरात रस्तें बांधणीचं काम हाती घेतलं त्यावेळी भारतानं पण चीनना विरोधाला वाटाण्याच्या अक्षता दाखवल्या. म्हणून या भागावर लक्ष ठेवण्यासाठी भारतानं दोन बंकर उभारले. त्यानंतर भारतीय लष्कराने आपली पण चिनी सैन्यानं भारताचन्ही बंकर उद.

‘रिडनफोर्समेंट’ म्हणजे लष्कराची एक मोठी तुकडी या भागात तैनात केली, त्यानंतर दोन्ही देशातील सैन्यात तणाव वाढला. भारताला धोक्याची घंटा :-

भारतीय लष्कराच्या वरीष्ठ दर्जाच्या अधिकार्याने दिलेल्या माहितीनुसार, जर चीनने वादग्रस्त डोकलाममध्ये रस्ते बांधणीचं काम सुरु ठेवलं, तर सामरिक दृष्टीकोनातून भारतासाठी ही धोक्याची घंटा आहेचीन आणि -कारण हा भाग भारत . भूतानमधील ‘ट्रायजंक्शन’ तिन्ही देशांना जोडणारा मध्य भाग आहेशिवाय ., चीनकडून नव्यानं बांधणी करण्यात येणारा ‘चिकननेक’ (रस्ते बांधणी पश्चिम बंगालपासून केवळ (42 किलोमीटर दूर आहे .शिवाय, यामुळे सिलीगुडी कॉरिडॉरमधील भारतीय मनुष्यवस्ती असलेल्या जवळपास 35 ते 40 किलोमीटरच्या भागावरही याचा परिणाम होऊ शकतो . विशेष म्हणजे, याच बाजूला नेपाळची सीमाही आहेत्यामुळे युद्धजन्य परिस्थितीत . चीनच्या या रस्त्याचा भारताला सर्वात मोठा धोका आहे युद्धजन्य परिस्थितीत चीनला आपलं सैन्य सीमेवर तैनात करणं सोपं होणार आहेत्यामुळे अशा परिस्थितीत जर चीनचं सैन्य सीमेवर पोहचलं, तर भारताचा ईशान्य भाग गिळंकृत करेल.त्यामुळेच भारतानं चीनच्या रस्ते बांधणीच्या कामाला विरोध केला आहे .

भूतानला गाजर :-

चीनच्या परराष्ट्र मंत्रालयाचे प्रवक्ते लू कांग यांनी जुलै मध्ये म्हटल्यानुसार, डॉंगलॉंग हा चीनचा प्राचीन काळापासूनचा एक भाग आहे ; भूतानचा नव्हे. 'भारताचा त्याच्याशी संबंध नाही. डॉंगलॉंगमध्ये चीन रस्ता बांधत असेल तर तो आमचा सार्वभौमत्वाचा एक प्रकार आहे. हे संपूर्णतः न्याय्य आणि कायदेशीर आहे. त्यात इतरांनी हस्तक्षेप करण्याचा अधिकार नाही.' असे ते म्हणाले होते.भूतानच्या प्रदेशावर जर चीनने हा रस्ता बांधला तर ईशान्य भारताला जोडणार्या या भूभागाजवळ सहजगत्या पोहोचण्याची संधी चीनला मिळू शकते, अशी चिंता भारताला सतावते आहे.30 जूनला भारतीय परराष्ट्र मंत्रालयाने या संदर्भात निवेदन दिलं होतं. त्यानुसार, या भागात रस्ता बांधणं म्हणजे भारताच्या सुरक्षेच्या दृष्टीने गंभीर प्रकार आहे.भारतीय सैन्याने विवादीत क्षेत्रावर प्रवेश केल्यानंतर चीन सरकारी माध्यमांसह सरकारने तीव्र टीका केली. भारताने आपल्या भूभागावर अतिक्रमण केल्याचा आरोप करित चीननं भारताची ही कृती अनुचित असल्याचं म्हटलं.कुठलीही बोलणी करण्यापूर्वी भारताने या क्षेत्रातून आपलं सैन्य सक्तीने मागे घ्यावे, अशी मागणी चीनने केली.दुसरीकडे भारताने, दोन्ही देशांनी या भागातून सैन्य परत घ्यावे आणि नंतर बोलणीच्या माध्यमातून हा वाद सोडवावा असा प्रस्ताव ठेवला.डोकलाम शिवाय चीनच्या वायव्य भागातील 700 किमीच्या हद्दीवरुनही वाद सुरु आहेण डोकलाम आणि सिक्किम गिळंकप ृत

करण्यासाठी चीनने भूतानला डोकलामच्या बदल्यात वायव्येकडील भूभाग सोडण्याचा गाजर दाखवला. भूतानचे संबंध चांगले असल्याने भूतानने चीनच्या पण भारत प्रस्तावाला नकार दिला आहे.

भारतभूतान संबंध :-

भूतान हा भारताच्या उत्तर सीमेवरील एक छोटा भूपरिवेष्टित देश आहे. भूतानच्या तीन दिशांना भारत देश तर चौथ्या दिशेस चीन देश आहे. भूतानच्या पूर्वेस अरुणाचल प्रदेश, पश्चिमेस सिक्कीम, दक्षिणेस पश्चिम बंगाल व उत्तरेस तिबेट आहे. थिंपू ही भूतानची राजधानी व सर्वात मोठे शहर आहे. भूतान एक प्रोटेक्टोरेट देश असून (रक्षित), त्याच्या रक्षणाची जबाबदारी भारतावर आहे यासाठी 2007 मध्ये भारत आणि भूतानमध्ये राष्ट्रीय सुरक्षेसंदर्भात करार झाला आहे. करारान्वये, भूतानच्या सैन्याला भारतीय लष्कर प्रशिक्षण देत आहे. भारताकडून होजांग परिसरात यासाठी प्रशिक्षण केंद्र सुरू केल्याने 'इंडियन मिलिट्री ट्रेनिंग टीम' नावाची भारतीय लष्कराची एक तुकडी भूतानच्या लष्कराला प्रशिक्षण देत आहे. पण यावरूनही चीनने भारतावर आगपाखड केली आहे. भूतान सैन्याला प्रशिक्षण देण्याच्या नावाखाली भारतीय लष्कर चीनच्या सीमेवर पण चकडून होत आहे. पेट्रोलिंग करत असल्याचा आरोप चीनने सर्व आरोप भारताने फेटाळून लावले आहेत.

चीनकडून तिबेटमध्ये रेल्वे मार्ग उभारण्याची तयारी

दुसरीकडे चीनकडून तिबेटची राजधानी ल्हासापासून यादंगपर्यंत रेल्वे मार्ग उभारला जात आहे. चीन आणि त्यामुळे हे रस्ते बांधणीचे काम पूर्ण झाल्यानंतर भारत.

भूतानच्या 'ट्रायजंक्शन' पर्यंत रेल्वे मार्ग उभारून, भारताला कोडीत पकडण्याचा चीनचा डाव आहे. लष्कर प्रमुख बिपिन रावत यांचा सिक्किम दौरा दरम्यान, भारत-चीन लष्करामधील तणावाच्या पार्श्वभूमीवर भारतीय लष्कर प्रमुख बिपिन रावत यांनी यावेळी त्यांनी भारतीय लष्करा सिक्किमचा दौरा केलाच्या फॉरमेशन हेडक्वार्टरमध्ये जवान आणि वरिष्ठ अधिकार्यांशी चीनमधील हालचालींवर चर्चा केली. चीन पण भारत त्यामुळे वादानंतर चीनने कैलास मानसरोवर यात्रेतील चीनची हद्द बंद केली आहे. गटोकमध्ये थांबून आहेत मानसरोवर यात्रेला निघालेले यात्रेकरून सिक्किमच्या गंग चीनच्या उलट बॉबा :-

दुसरीकडे, सोमवारी चीनच्या परराष्ट्र खात्याच्या प्रवक्त्याने पुन्हा एकदा 1959 मध्ये तत्कालिन पंतप्रधान जवाहरलाल नेहरूंनी सिक्किमप्रश्नी लिहिलेल्या पत्राचा दाखला देऊन, भारतावर घुसखोरीचा आरोप केला. प्रवक्त्याने या पत्रातील अक्सार्ड पण चिनी चीनवर जे भाष्य केलं, त्यातील मुख्य विषयालाच बगल दिली होती. भूतानच्या परराष्ट्र मंत्र्यांनीही भूतानच्या हद्दीत रस्ता बांधण्याचा प्रकार हा दोन देशांमधील आतापर्यंत

झालेल्या करारांचं थेट उल्लंघन करणारा असून दोन्ही देशातील शांतता प्रक्रिया प्रभावित करणारा असल्याचं चीनला सांगितलं. 1984 पासून चीन आणि भूतानमध्ये सीमारेषेसंदर्भातील बोलणी सुरु आहेत. या वाटाघाटींना अंतिम स्वरून येईपर्यंत दोन्ही देशांकडून त्यांच्या सीमाक्षेत्रात शांतता राखली जाईल, असा लिखित करारही करण्यात आलेला आहे.

SMART CITY CONCEPT AND CHALLENGES IN INDIA

Nilesh. B. Nerkar
Department of Geography MVP Art and
Commerce college Soygaon Malegaon
Dist -Nashik (MH) India

Dr. (Smt) Baishakhi Dutta
Department of Geography R.J.College
Art's ,Science and Commerce College
Ghatkopar(w)
Dist.Mumbai -400086.Maharashtra
(INDIA)

ABSTRACT

Smart city development is gaining considerable recognition in the systematic literature and international policies throughout the world. The intention of India smart city mission program is to achieve better living condition in sustainable environment with smart solution. City has been the engines of economic growth since the industrial revolution. While effect of moderation city development has not always been smart sacrificing human health, for instance, for greater productivity. Smart city are now emerging. Leading smart city such as Stockholm, New York, Vienna and Toronto have been incorporated efficiency into building, infrastructure and social spaces using technological advisement, increasing the livability, workability and sustainability of these place. Government of India planning to build 100 smart cities in various part of the country. A selection of Smart City initiatives will be presented in order to establish relations between the identified .city challenges and real Smart Projects designed to solve them. As a result of the project, a Projects Guide has been developed as a tool for the implementation of Smart City projects that efficiently respond to complex and diverse urban challenges without compromising their sustainable development and while improving the quality of life of their citizens.

KEYWORDS – Smart city, Cities mission.(Goi)Government of India ,

INTRODUCTION:

Cities are the main poles of human and economic activity. They hold the potential to create synergies allowing great development opportunities to their inhabitants. However, they also generate a wide range of problems that can be difficult to tackle as they grow in size and complexity. Cities are also the places where inequalities are stronger and, if they are not properly managed, their negative effects can surpass the positive ones. Urban areas need to manage their development, supporting economic competitiveness, while enhancing social cohesion, environmental sustainability and an increased quality of life of their citizens. With the development of new technological innovations -mainly ICTs- the concept of the "Smart City" emerges as a means to achieve more efficient and sustainable cities.

SMART CITY CONCEPT:

Smart City represents innovation in city management, its services and infrastructures; a common definition of the term has not yet been stated. There is a wide variety of definitions of what a Smart City could be. However, two trends can be clearly distinguished in relation with what are the main aspects that Smart Cities must take into consideration. On the one hand there is a set of definitions that put emphasis just on one urban aspect (technological, ecological, etc.) leaving apart the rest of the circumstances involved in a city. This group of monotonic descriptions are misunderstanding that the final goal of a Smart City is to provide a new approach to urban management in which all aspects are treated with the interconnection that takes place in the real life of the city. Improving just one part of an urban ecosystem does not imply that the problems of the whole are being solved.

Smart City development is at the same time highly complex and challenging. The integration of urban systems into one "system of systems" capable of self-adaptation and self-management is difficult. There are constraints on system interoperability and reuse of data, and heterogeneous sources of quantitative and

qualitative data provided by open government, citizen science and other projects and low capacity for connecting data to analytical models. Smart Cities raise serious concerns related to citizens' privacy, government surveillance and other digital rights. There are also other issues with connecting urban sustainability challenges to actionable approaches, social and territorial cohesion issues requiring unique governance solutions, and the different discourse used by technologists and policymakers. In the end, it is critical that Smart Cities are not driven by particular ideological positions or commercial interests, but rather embrace public value in all economic, social, ecological, and political dimensions.

THE OBJECTIVES OF THE SMART CITIES MISSION:

1. Strengthening urban management systems through an effective monitoring and evaluation platform
2. Enhancing the capacity of urban institutions through easily accessible tools and guidance
3. Pushing a decentralization agenda by strengthening avenues for citizen participation
4. Reducing conflict in the urban environment by treating cities as spaces through a seamless and responsive planning and policy framework
5. Targeting inclusive and equitable urbanization by enhancing livability conditions across all segments of a city.

SMART CITY MISSION IN INDIA:

A review of the Smart Cities Mission suggests that the initial idea was to build 100 new cities with state-of-the-art technology. The National Conclave on Building Smart Cities organized by GoI in September 2014⁸ had stressed on the following three key aspects for smart cities: Competitive (attracts investors and residents), Sustainable (social, financial and environmental) Capital Rich (human and social). The Government of India (GoI) also expressed the view that it is 'keen to promote Wealthier, Healthier and Happier cities for better urban life' and that

'Technology will play a major role in Smart City governance'. The use of technology, specifically ICT as a key aspect of smart cities, was also recognized at the Conclave. GoI had allocated INR 7060 crore for the Smart Cities Mission in its interim budget of 2014-15. The budget of 2015-16 has a provision of INR 6000 crore for the Mission and the development of 500 habitations under the National Urban Rejuvenation Mission (NURM)⁹. A government panel has approved the allocation of INR 2.73 lakh crore over the next 10 years for the development of 100 smart cities and 500 cities under NURM¹⁰. The 'Mission Statement and Guidelines' for the Smart Cities Mission released by the Ministry of Urban Development (MoUD) on June 25, 2015 attempt to provide clarity on some of the smart city related aspects and on the Mission itself. Strategic components identified in the Mission include: Retrofitting, Redevelopment, Green Field development, Pan-city development. The guidelines further elaborate on the selection process for cities to be covered under the Mission through the 'City Challenge' programmer. According to this programmer, the initially shortlisted cities in the different state will need to prepare Smart City Proposals (SCPs). The final selection will be based on an evaluation of SCPs by an Expert Committee. Other important points elaborated in the guidelines include: Implementation of the Mission by Special Purpose Vehicle (SPV), Financing of selected cities and process of releasing funds, Monitoring process to be adopted for the Mission, Convergence with other government schemes. The last point is critical in achieving development goals for a city and has been an issue highlighted in previous urban development programmers as well. However, the various aspects of the Mission and the very concept of smart cities lack clarity. Highlights from the international and domestic debates on smart cities are presented in the next section to understand the challenges and opportunities associated with building smart cities better, in the Indian context. Master planning and regional planning have been two major exercises that evolved out of the planning process endorsed in India since independence²¹. The last

decade of urban reform has led to the emergence of City Development Plans (CDPs) as a product of JNNURM and UIDSSMT. While Master Plans continue to be the spatial planning tool with a set of Development Control Regulations (DCR) enforced by the ULB/development authorities, CDPs stand as project-investment plans, for cities, with minimal spatial reference. Moreover, there are plans pertaining to different sectors such as transportation (City Mobility Plans, CMP), water, sanitation (City Sanitation Plans, CSP), drainage, etc. at the city or regional level based on specific institutional jurisdictions.

SMART CITY CHALLENGES:

Water Supply, Sewerage and Solid Waste In urban India there is tremendous pressure on civic infrastructure systems like water supply, sewerage and drainage, solid waste management. Recent data suggest that water supply is available for only 2.9 hours per day across cities and towns and the non-revenue water that includes physical and revenue losses, account for 40–60% of total water supply. About 30–50% of households do not have sewerage connections and less than 20% of total waste water is treated. Solid waste systems are severely stressed. The state of services reflects the deterioration in the quality of city environments. The focus for improvements in water supply and sewerage is on the creation of new assets rather than the management of existing assets.

Urban Transport

Most of the cities in India have been facing urban transport problems for many years, affecting the mobility of people and economic growth of the urban areas. These problems are due to the prevailing imbalance in modal split; inadequate transport infrastructure and its sub-optimal use; no integration between land use and transport planning; and no, or little, improvement in city bus services, which encourage a shift to personalized modes. In view of this, the Government of India (Urbanization) approved the National Urban Transport Policy in April 2006. This policy primarily focuses on the mobility of people, not the mobility of vehicles.

This will require the public transportation system to be more attractive to users. The challenge for improved bus transport is to provide good quality service at an affordable price.

Water Supply, Sewerage and Solid Waste:

In urban India there is tremendous pressure on civic infrastructure systems like water supply, sewerage and drainage, solid waste management, etc. Recent data suggest that water supply is available for only 2.9 hours per day across cities and towns and the non-revenue water that includes physical and revenue losses, account for 40–60% of total water supply. About 30–50% of households do not have sewerage connections and less than 20% of total waste water is treated. Solid waste systems are severely stressed. The state of services reflects the deterioration in the quality of city environments. The focus for improvements in water supply and sewerage is on the creation of new assets rather than the management of existing assets.

Urban Transport:

Most of the cities in India have been facing urban transport problems for many years, affecting the mobility of people and economic growth of the urban areas. These problems are due to the prevailing imbalance in modal split; inadequate transport infrastructure and its sub-optimal use; no integration between land use and transport planning; and no, or little, improvement in city bus services, which encourage a shift to personalized modes. In view of this, the Government of India (Urbanization) approved the National Urban Transport Policy in April 2006. The Policy primarily focuses on the mobility of people, not the mobility of vehicles. This will require the public transportation system to be more attractive to users. The challenge for improved bus transport is to provide good quality service at an affordable price.

Air Pollution:

The major sources of air pollution in India Cities are still industries, vehicles and

biomass burning. Some recent estimates also indicate that resuspended dust is one of the major contributors to the overall high particulate level in cities. Besides chronic eye irritation, more serious consequences include bronchitis and respiratory infections due to high levels of air pollution. In the past two decades, the number of vehicles on India's Roads has increased tenfold. Some of the air pollution components have shown a decline in Indian cities due to varied intervention taken up by the government, such as cleaner fuel, phasing out older vehicles, better technology vehicles, as also strict enforcement. India also completely phased out lead content in petrol by 1999. Transportation Among the several issues that the growth of cities has brought to the urban scene, transport has emerged as a main concern for environment management and sustainability. It critically keeps growing as we move towards the mega and large cities. An area of a major concern has been the growth of motor vehicles. In cities, the existing status of personalized transport is affecting the cities by the continual decline of the mobility as well as deterioration of air quality. The severe nature of the problem is evident in metros and large cities. The necessity, therefore, is to examine the objective of improving public transportation in mega and large cities with the main focus on the sustainability of transport, particularly making public transportation as the main priority of the authorities. The transportation system has equal significance. In terms of city's life, a good, modern, and efficient transport system would enhance efficiency, productivity, environment, public health, and quality of life in the cities.

Weak Staff Capacity

Most ULBs in India do not have the capacity to promote cities as 'engines of growth'. The local agencies have weak institutional capacity to plan for spatial, social and economic development, have unstable revenue streams, and low capacity to plan, mobilize resources and implement urban infrastructure projects. There is a need for strengthening of ULBs to play a pivotal role in national economic growth.

Conclusion:

Making cities smart will take time and effort. It is critical to create an enabling policy and regulatory environment. This will allow a nuanced approach to a smart, and yet sustainable roadmap for urban development. Smart cities need to be sustainable as well in order to ensure successful returns on investments made in developing them. Many countries are interested in partnering with Indian firms on smart city ventures. Foreign investment is crucial and required. However cities need to be empowered and capacitated to decide on the specific aspect to invest upon, along with the modalities and timing of that investment. It is important to show some actions happening on the ground to win investors' confidence. Equal impetus also needs to be given to advanced research in Urban Planning to encourage innovation and make investments sustainable. Each city has its established functional cycle of people-economy-enterprises-culture. Using technology to improve quality of life within this functional cycle will be challenging, but will be the most desirable form of a smart city in India.

REFERENCE:

- GIS based mapping (May 2015 ecbp) Ministry of Urban development GOV INDIA
- Bharat Gadak and Ravindra G.Jaybhaye (August 2016) An identification of urban pattern on 1981 to 2011 of Nashik city .Maharashtra Research gate publication.
- Sager mali ,Santosh Bhailume , Sandipan Das 'Geoinformatic application for urban utilities information system : A case study of Pune city ' *International journal of computer applications volume 65-N022 March - 2013*
- Sylvie Daniel and Marie -Andree Doran Geosmart city : geomatics contribution to the smart city .IBM,Smart city -Overview .



MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

V I D Y A W A R T A®

SPECIAL ISSUE January-2019

RECENT TRENDS IN ECONOMICS AND COMMERCE



Chief Editor

Dr.Bapu G.Gholap
Beed

Guest Editor

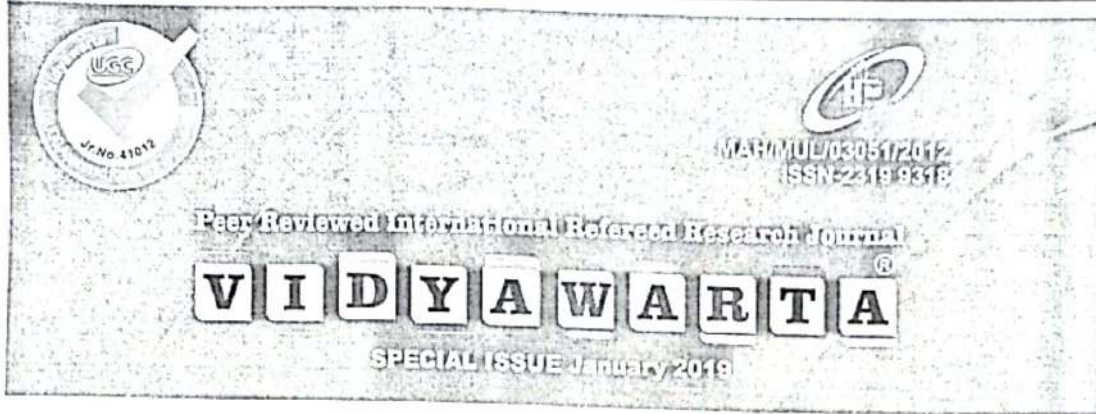
Dr.Vijay J. Medhane
Principal
M.V.P.Samaj's
Smt.Vimalaben Khimji Tejookaya Arts,
Science & Commerce College,
Deolali Camp, Nashik

Executive Editor

Dr.S.K.Pagar
Professor & HOD Economics
Smt.Vimalaben Khimji Tejookaya Arts,
Science & Commerce College,
Deolali Camp, Nashik

ISSN :
2319-9318
January 2019

PEER REVIEWED INTERNATIONAL REFERRED RESEARCH JOURNAL
Impact Factor : 5.234 Special Issue : "Recent Trends in Economics & Commerce"
UGC Approved Journal No.41012



Special Issue :
“Recent Trends in Economics & Commerce

UGC Approved Journal No. 41012
January, 2019

Chief Editor

Mr. Bapuji Gholap
Harshwardhan Publication Pvt. Ltd.
At Post Limbaganesh,
Tal. & Dist. Beed-431 126

Guest Editor	Executive Editor
Dr. Vijay J. Medhane Principal MVP Samaj's S.V.K.T. Arts, Science & Commerce College, Deolali Camp, Nashik	Dr. S. K. Pagar Professor & HOD, Economics MVP Samaj's S.V.K.T. Arts, Science & Commerce College, Deolali Camp, Nashik

INDEX

Sr. No.	Topic	Researcher	Page No.
1	A research paper on proprietary ratio of the selected tea companies in india	Dr. Jignesh P. Vaghela Prin. Dr. K.N.Chavda	1
2	Agriculture growth and economic development	DR. Girishkumar N. Rana	9
3	Usage of Internet banking among generations a study with reference to UT of Dadra and Nagar Haveli	Dr.S. Balasubramanian, Dr. Shruti Jha	16
4	Agriculture sector in India: Performance and challenges	Dr. P. V. Salve Dr. S. T. Sangle	21
5	Digital Marketing: changing perspective in indian scenario.	Dr. Ramesh D. Darekar Mrs. Vibhawari V. Patil	28
6	"Human Development Index (HDI) in Indian Economy"	Dr.Parag P.Kadam	34
7	A research article on digitization: crucial driver for changing indian economy	Dr. Pandurang B. Patil	42
8	Service sector: A growth engine of the indian economy	Dr. Sudhakar Pagar Ms. Suvama Kadam	47
9	Indian Agriculture Development: Issues and Challenges	Dr. S. J. Deshmukh Prof. K. S. Kamble	55
10	Organic farming for sustainable development in agriculture	Dr Sonawane Ashalata Deoram	61
11	Crisis in Sugar Cooperatives in Maharashtra	Prof. Dr. S. K. Pagar	71
12	Corporate Social Respoinsibility	Prof. Shashikant L. Bhoj	78
13	Recruitment and Selection Strategies of Public Sector Undertakings	Prin. Dr.Dilip B. Shinde Dr. Urmila Yogesh Gite	82
14	"Challenges of women entrepreneur in rural area"	Prof. V.G.Gaikwad	86
15	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्येची कारणे व उपाय	डॉ.डी.एन.कारे	91
16	शेतकरी आत्महत्या - एक विदारक सत्य	डॉ. मनिषा के. आहिर	97
17	Role of government for decreasing Farmers' suicide in India	Dr.Jayashri P.Jadhav Dr.Yuvraj P.Jadhav	100
18	Heath Care Issues & Challenges in India	Dr. Hiranman M. Kshirsagar	104
19	Role of Industrial Development in Economic Growth	DR. P.T.Nikam DR. M.V.Jagtap	108
20	A study of inclusive model of Jain Irrigation Systems Ltd., Jalgaon	Dr. Smita N. Pakdhane	110
21	"Towards Block Development"	Dr.S. K. Pagar Prof. S. R.Pagar	117
22	मानव विकास निर्देशांक, स्त्री-पुरुष समता मापक निर्देशांक	प्रा.डॉ. वाकळे जी.ई.	125
23	कृषी क्षेत्रातील आर्थिक विकास	प्रा.डॉ.जितेंद्र खेमचंद साळी	131

ROLE OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT IN ECONOMIC GROWTH

DR. P.T.Nikam & DR. M.V.Jagtap
(Dept. of Economics)
Arts and Commerce College Soygaon, Malegaon

INTRODUCTION:

Industrial sector is of great importance for economic development of country. It is a historical fact that countries with strong industrial sector have showed more economic growth and development industrial sector. Industrial development plays a pivotal role in economic growth. It raises the productive capacity of economy.

Industrial development reduces dependence on agricultural exports to earn badly-needed foreign exchange. An Industrialized nation is always economically stronger and capable of defending itself against any aggression.

The following points explain the role of industrial development in economic growth:

- **Modernization of Agriculture:**

Industrial development is necessary for modernization of agriculture. In India, agriculture is traditional and backward. The cost of production is high and productivity is low. We need tractors, threshers, pump sets and harvesters to modernize agriculture. To increase productivity, we need chemical fertilizers, pesticides and weedicides etc. These are all industrial products. Without industrial development, these goods cannot be produced.

Agricultural products like jute, cotton, sugarcane etc. are raw materials. To prepare finished products like flex, textiles and sugar etc. we need industrialization. So industrial development is necessary for modernization of agriculture.

- **Development of Science and Technology:**

Industrial development encourages the development of science and technology. The industrial enterprises conduct research and develop new products. Ethanol in the form of bio fuel is an example of industrial development. Industry conducts research on its wastes and develops byproducts like biodiesel from Jatropa seeds. Due to industrialization, we have made progress in atomic science, satellite communication and missiles etc.

- **Capital Formation:**

Acute deficiency of capital is the main problem of Indian economy. In agricultural sector, the surplus is small. Its mobilization is also very difficult. In large scale industries, the surplus is very high. By using external and internal economies, industry can get higher profit. These profits can be reinvested for expansion and development. So industrialization helps in capital formation.

- **Industrialization and Urbanization:**

Urbanization succeeds industrialization. Industrialization in a particular region brings growth of transport and communication. Schools, colleges, technical institutions, banking and health facilities are established near industrial base. Rourkela was dense

forest but now is ultra modern town in Orissa. Many ancillary units have been established after setting up of big industry.

- **Self-reliance in Defense Production:**

To achieve self-reliance in defense production, industrialization is necessary. During war and emergency dependence on foreign countries for war weapons may prove fatal. Self-reliance in capital goods and industrial infra-structure is also necessary. Atomic explosion at Pokhran (Rajasthan) and Agni Missile are examples of industrial growth.

- **Importance in International Trade:**

Industrialization plays an important role in the promotion of trade. The advanced nations gain in trade than countries who are industrially backward. The underdeveloped countries export primary products and import industrial products. Agricultural products command lower prices and their demand is generally elastic. While industrial products command higher values & their demand is inelastic. This causes trade gap. To meet the deficit in balance of payments we have to produce import substitute products or go for export promotion through industrial development.

- **Use of Natural Resources:**

It is a common saying that India is a rich country inhabited by the poor. It implies that India is rich in natural resources but due to lack of capital and technology, these resources have not been tapped. Resources should be properly utilized to transform them into finished industrial products. The British people took India's cheap raw-materials for producing industrial goods in their country. India was used as a market for their industrial products. So India fought with poverty and England gained during industrial revolution. Hence industrialization plays important role for proper utilization of resources.

- **Alleviation of Poverty and Unemployment:**

Poverty and unemployment can be eradicated quickly through rapid industrialization. It has occurred in industrially advanced countries like Japan. The slow growth of industrial sector is responsible for widespread poverty and mass unemployment. So with fast growth of industrial sector, surplus labor from villages can be put into use in industry.

Conclusion:

The industrial sector is one of the important sectors of the economy both in terms of its spread over the economy and its contribution to the generation of income, employment and foreign exchange of earnings. Industrial sector is also useful for development of agriculture, science and technology, International trade, capital formation, and development of country.

References:

1. www.wikipedia.com
2. www.indianeconomics.com
3. Rudar Dutt & KPM Sundaram, 2016, Indian economy, S Chand Publication, New Delhi.



MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

V I D Y A W A R T A®

SPECIAL ISSUE January 2019

Maratha Vidya Prasarak Samaj's

ARTS AND COMMERCE COLLEGE, KHEDGAON

Tal.Dindori, Dist.Nashik - 422 205



TWO DAYS NATIONAL SEMINAR ON

**“Economic and Political
Influence of Asian
Countries : India & China**

Dated : 18th and 19th January, 2019



Guest Editor
Dr.D.N.Kare

Sponsored by

BCUD,

Savitribai Phule Pune University, Pune

Organized by

Department of Economics & Politics

INDEX

Sr. No.	Topic	Researcher	Page No.
1	भारत-चीन परराष्ट्रीय धोरण वाटचाल	प्रा.अभिनव संपत पोटे	1
2	भारत चीनचा तुलनात्मक आढावा	प्रा.डॉ.सुनली प. उगले	5
3	चीन आणि सार्क देश	प्रा.डी.डी.ठाकरे	16
4	भारत व असियान संघटना	डॉ.डी.एन.कारे	24
5	भारताच्या दृष्टीने हिंदी महासागराचे सामरिक महत्त्व आणि चीनची भूमिका	प्रा.भिमराज गायकवाड	29
6	सीमावादाचे भारत व चीनवरील परिणाम	प्रा.जे.एल.पगारे	33
7	भारत आणि चीन आशियाई देशावर आर्थिक आणि राजकीय प्रभाव	प्रा.जगताप संदीप शांताराम	38
8	भारत चीन संबंध	प्रा.डॉ.पंकज निकम प्रा.डॉ.मनोज जगताप	42
9	भारत - चीन संबंध	डॉ.व्ही.डी.कापडी प्रा.सतीश सुभाष कावळे	46
10	भारत चीन संबंधाचे बदलते पैलू	डॉ.लंबोळे गणेश मनोहर	52
11	भारत व चीन आर्थिक व राजकीय संबंध	डॉ.मनिषा के. आहेर	55
12	भारत आणि चीनची आशियातील भूमिका	प्रा.संजय अ. मराठे	59
13	भारत चीन संबंध	कु.निकिता लक्ष्मण गांगुर्डे	67
14	भारत आणि चीन यांच्यातील तुलना आणि आव्हाने	डॉ.अमोल ए. गायकवाड प्रा.डॉ.एच.एम.क्षीरसागर	70
15	सार्कची कार्यप्रणाली व इतर देश	प्रा.कृष्णा रावा पाडवी	75
16	चीन संबंधाचे बदलते स्वरूप आणि दक्षिण आशिया	प्रा.राजेंद्र विश्वनाथ पवार	81
17	दक्षिण आशियातील भारत आणि चीन देशातील अर्थव्यवस्था	डॉ.डी.डी.वाळके	86
18	भारतीय अर्थव्यवस्था व चीनची अर्थव्यवस्था: एक अभ्यास	प्रा.डॉ.गोरक्षनाथ रामदास पिंगळे	93
19	भारत आणि चीनची आशियामधील भूमिका	प्रा.अरूण अंबादास पोटे	99
20	डोकलाम समस्या आणि भारत चीन संबंध	प्रा.पी.डी.गोणारकर	105
21	हिंदी महासागराचे भूराजकारण आणि चीनची उपस्थिती	प्रा.श्रीमती सुवर्णा पी. धामणे	110
22	भारत-चीन संबंध	प्रा.आर.जे.निकम	116
23	भारत आणि चीन : आशिया देशावरील प्रभाव	प्रा.शशिकांत एस. सांगळे	120
24	भारत चीन सीमा वाद	कु.स्वाती लक्ष्मण भोईटे	124

भारत चीन संबंध

प्रा. डॉ. पंकज निकम

प्रा.डॉ. मनोज जगताप

कला व वाणिज्य महाविद्यालय सोयगाव, ता. मालेगाव

भारत-चीन धोरण अभ्यासताना शेजारील राष्ट्र सोबतचे संबंध विचारात घेणे आवश्यक आहे. भारत हा आशिया खंडातील सर्वात मोठा लोकशाही प्रधान देश आहे त्यामुळे आपोआपच भारताच्या परराष्ट्र धोरणाला शेजारील राष्ट्र प्रभावित करत असतात. इसवीसन 1991 नंतरच्या जागतिक राजकारणातील स्थित्यंतरानंतर व नवीन आर्थिक सुधारणांच्या धोरणाचा स्वीकार भारताने केल्यामुळे जग अधिकच जवळ आले आहे. ग्लोबल व्हिलेजमध्ये जगाचे रूपांतर झाले आहे. जागतिक पातळीवर घडलेल्या या बदलांचा भारताने आणि भारताशेजारील काही राष्ट्रांनी चांगला वाईट अनुभव घेतलेला आहे. त्यामुळे आजच्या जगात परस्परांशी सहकार्य आणि सामोपचाराचा विचार निट करणे महत्त्वाचे ठरत आहे.

‘भारत चीन संबंध:-

चीनच्या दृष्टिकोनातून भारताचे स्थान फक्त दक्षिण आशिया पुरतेच आहे. जागतिक स्तरावर ते भारताला विशेष असे महत्त्व देत नाहीत. परंतु १९६८ मध्ये पोखरण आण्विक शस्त्रास्त्रांच्या परीक्षणानंतर चीन एकदम खडबडून जागा झाला व चीनला भारताची दखल घ्यावी लागली. गेल्या दहा वर्षांपासून भारताच्या प्रगतीचा चढता आलेख व आर्थिक प्रगती होताना पाहणे चीनला त्रासदायक ठरत आहे. बरेच देश भारताला आर्थिक उलाढालीसाठी भागीदार करून घ्यायचा विचार करत आहेत त्यांना चीनपेक्षा भारत अधिक चांगला पर्याय वाटतो. भारत हा आशिया खंडातील एकच देश आहे जो आकारमान, नैसर्गिक स्रोतांमध्ये, लोकांची राहणी आणि सर्वच बाबतीत चीनला चांगली टक्कर देऊ शकतो. त्यामुळेच दीर्घकाळापर्यंत आशियातील एक प्रभावी देश म्हणून असलेल्या चीनचा प्रभाव कमी होऊ शकतो. भारत काही बाबतीत नक्कीच चीन पेक्षा वरचढ आहे. भारतातील लोकशाही, येथील न्यायपद्धती, विविध क्षेत्रातील विकास दर, आधुनिक बँकिंग क्षेत्र तसेच इंग्रजी भाषेचे ज्ञान हे होय. भारत चीन संबंध – ऐतिहासिक पार्श्वभूमी – घटनाक्रम –

- भारत आणि चीनमधील संबंध हे ईसपूर्व पासून प्रस्थापित झाले आहेत.
- भारत आणि चीन या दोन राष्ट्रांना इतिहास काळापासून जोडणारा महत्त्वाचा दुवा म्हणजे बौद्धधर्म आहे.
- चीनने भारत आणि चीनदरम्यान वसलेल्या तिबेट प्रांतावर सन १९५० मध्ये लष्करी कार्यवाही करून आपले नियंत्रण प्रस्थापित केले. चीनच्या या लष्करी कार्यवाहीचा भारताने विरोध केला. तिबेटवर नियंत्रण प्रस्थापित

केल्यानंतर चीनने तिबेटचे धर्मगुरू ददलाई लामा यांच्यावर १७ कलमांचा समावेश असलेल्या एका करारावर स्वाक्षरी करण्यासाठी दबाव आणला. या करारामध्ये तिबेट हा चीनचा अविभाज्य घटक असल्याचे नमूद करण्यात आले होते.

- तबेटच्या प्रश्नावरून भारत आणि चीन संबंधांमध्ये तणाव जरी निर्माण झाला असला तरी १९५६ च्या कोरिअन पेचप्रसंगादाराम्यान भारताने चीनची बाजू उचलून धरली. चीनला आक्रमक ठरविनार्याला संयुक्त राष्ट्र संघटनेच्या प्रस्तावाला भारताने विरोध केला.
- सन १९५५ नंतर सीमावादाच्या प्रश्नावर भारत- चीन संबंधांमध्ये तणाव निर्माण झाला.
- सन १९५६ मध्ये तिबेटमध्ये चीनच्या वाढत्या दडपशाहीविरोधी प्रदर्शने झाली.एवढेच नाही, तर तिबेटी शासनाने तिबेट हे स्वतंत्र राष्ट्र असल्याचे घोषित केले. चीनने तिबेटमधील हा उठाव हिंसक मार्गाने मोडून काढला. तिबेटी धर्मगुरू दलाई लामा यांनी तिबेट सोडून भारतामध्ये राजाश्रय घेतला. लामा यांना भारताने आश्रय दिल्यामुळे भारत - चीन संबंधांमध्ये मोठा तणाव निर्माण झाला.
- सन १९६० मध्ये चीनने स्पष्टपणे घोषणा केली, की चीनला भारत- चीन दरम्यानची मेकमोहन सीमारेषा मान्य नाही. ही सीमारेषा ब्रिटिशांनी ठरवलेली असून , सीमारेशाविषयीचा हा करार ब्रिटीश शासन आणि तिबेटमधील तत्कालीन राजवट यांच्यात झाला होता. तिबेट आता चीनचा भाग झाल्यामुळे ही सीमारेषा चीनला मान्य नाही.
- सीमावादाच्या प्रश्नावरून भारत आणि चीनदरम्यान १९६२ मध्ये युद्ध सुरु झाले. या युद्धादरम्यान चीनने भारताच्या हद्दीतील लडाखचा मोठा भाग गिळंकृत केला आहे.
- सन १९६२ च्या युद्धानंतर भारत आणि चीनमधील राजनैतिक पातळीवरच संबंध १९७०-७१ पर्यंत खंडित झाले होते. या दरम्यान चीन आणि पाकिस्थानमधले संबंध मात्र वृद्धिंगत होत गेले. चीनने १९६६ आणि १९७१ च्या भारत-पाकीस्थान युद्धात पाकिस्थानाची बाजू उचलून धरली , तसेच चीनची काश्मिरविषयीची भूमिका पाकिस्थानधार्जिणी होती.
- सन १९७०-७१ मध्ये अमेरिका आणि चीन यांचे संबंध सुधारण्याबरोबर भारत आणि चीन यांच्यात खंडित झालेले संबंध प्रस्थापित करावे म्हणून चीनने स्वतः पुढाकार घेतला. १९७१ मध्ये भारताच्या टेबल-टेनिस संघाला चीनने आमंत्रित केले.

- सन १९७४ मध्ये घडलेल्या दोन घटनांमधून भारत आणि चीन संबंधात पुन्हा तणाव निर्माण झाले यातील पहिली घटना होती. भारताने राजस्थानमधील पोखरण येथे केलेले पहिले अणु परीक्षण आणि दुसरी घटना होती सिक्कीमचे भारतात विलीनीकरण. भारताच्या या दोन्ही निर्णयांचा चीनने विरोध केला.
- भारत आणि चीनदरम्यान खंडित झालेले राजनैतिक पातळीवरील संबंध पुन्हा एकदा १९७५ मध्ये प्रस्थापित केले. के. आर . नारायणन यांची चीनमध्ये राजधूत म्हणून नेमणूक करण्यात आली.

'भारत-चीन संदर्भात पुढील मुद्दे महत्त्वाचे ठरतात :-

- भारत चीन सीमा वाद :-भारत आणि चीनदरम्यान दीर्घकाळापासून सीमा वाद चालू आहे. चीन हा जगातील एकमेव देश आहे ज्याचे १५ शेजारील देशांसोबत सीमा वाद आहेत .यात रशिया ,भारत ,जपान ,कोरिया ,फिलिपाइन्स ,मलेशिया ,इंडोनेशिया, व्हिएतनाम इत्यादी देशांसोबत सीमाप्रश्न आणि लहान वेटांना धरून वाद आहेत .चीनने अनेकदा सीमावाद सोडवण्यासाठी बळाचा वापर केल्यामुळे शेजारील राष्ट्रांमध्ये चीन विषयी भीती आणि अविश्वासाचे वातावरण आहे .1962 मध्ये चीनने भारतावर आक्रमण केले तर १९७६मध्ये व्हिएतनाम विरोधी बळाचा वापर केला. चीनच्या या अरेरावी धोरणामुळे दक्षिण-पूर्व आशियातील अनेक राष्ट्रांनी अमेरिकेशी करार केले व जवळीक साधण्याचा प्रयत्न केला.
- चीनच्या संदर्भात भारत व शेजारील राष्ट्रांशी संबंध :- भारताच्या शेजारील राष्ट्रांच्या मदतीने चीन ज्या हालचाली सुरू करत आहे. ते भारतासाठी धोक्याचे आहे .भारताला विरोध करण्यासाठी गेल्या साठ वर्षांपासून चीन पाकिस्तानशी जवळीक साधत आहे .पाकिस्तानला आर्थिक मदत तसेच चीन पाकिस्तानच्या सीमालगत रेल्वेमार्ग, रस्त्यांचे जाळे निर्माण करत आहे. तशाच प्रकारे नेपाळच्या सीमा न पर्यंत ,तिबेट तसेच भारताच्या सीमेलगत रस्ते व दळणवळण सुविधांचा विकास हे भारतासाठी चिंतेचे विषय आहेत. तसेच बांगलादेश श्रीलंका यांच्याशी लष्करी संबंध वाढविण्यात चीनला यश मिळाले आहे. भारताशेजारील देशांमध्ये गुंतवणूक वाढवून चीनने आपला दबदबा निर्माण केला आहे. चीनचे वाढते आर्थिक वजन यामुळे त्यांना भारतावर आर्थिक दृष्ट्या अवलंबून असण्यापेक्षा चीन चा भागीदार व्हावेसे वाटते.
- जल विवाद:- चीनमधून भारतात प्रमुख चार नद्या येतात त्यांच्यावर चीन मोठे जल प्रकल्प उभारत आहे .व त्यामुळे पाण्याचा साठा मोठ्या प्रमाणात चीन करत आहे .या जलप्रवाहातील अडथळ्यामुळे भारताच्या बऱ्याच

मोठ्या प्रदेशावर याचा प्रतिकूल परिणाम होणार आहे .भारतासमोर जलसंकट निर्माण होऊ शकते व जाणीवपूर्वक चीन हे पाणी अडवण्याचा प्रयत्न करत आहे .त्यामुळेदेखील भारत आणि चीन संबंधांमध्ये कटुता निर्माण झाली आहे.

- सी. पी . इ. सी. :- चीन पाकिस्तान इकॉनॉमिक कॉरिडोर, हा चीन पासून सुरू होणारा मार्ग असून ग्वादर बंदरापर्यंत आहे हा रस्ता पाकव्याप्त काश्मीर, भारताच्या विवादित प्रदेशातून जातो हा देखील भारत-चीन संबंधात महत्त्वाचा अडसर निर्माण करतो.
- एन. एस. जी :- भारताला परमाणु पुरवठा गटाचा भाग बनावयाचे आहे. ज्यामध्ये 48 देश सभासद आहेत. परंतु जेव्हा सर्व 48 देश परवानगी देतात तेव्हाच कुठल्याही देशाला या गटात सामील करता येते .चीनने भारताला या गटात सामील होण्यापासून रोखले आहे.
- दक्षिण चीन समुद्र :- चीनने दक्षिण चीनच्या समुद्रापर्यंत त्यांचे ऐतिहासिक हक्क असल्याचा दावा केला आहे. समुद्रावर कोणताही देश असा दावा करू शकत नाही ,जमिनीपासून केवळ काही अंतरावर एक देश आपले नियंत्रण ठेवू शकते व तो सर्व देशां करता नियम सारखाच आहे .परंतु चीन दक्षिण चीनच्या समुद्रावर आपला दावा सांगत आहे त्यामुळे मुद्र मार्गे होणार्या व्यापारावर चीनचे नियंत्रण निर्माण होते व ही बाब आंतरराष्ट्रीय व्यापारात अडसर निर्माण करते.

‘सारांश:-

भारत आणि चीन यांचा संबंध विसाव्या शतकात आला त्याआधी भारत आणि चीन यांच्यात फारसे संबंध नव्हते .दक्षिण आशियातील एक प्रभावशाली देश म्हणून चीनची ख्याती होती. विसाव्या शतकाच्या उत्तरार्धात भारताचा आंतरराष्ट्रीय राजकारणात दबदबा वाढू लागला हे चीनला सहन होण्यासारखे नव्हते त्यामुळे आशिया खंडात आपला प्रभाव अबाधित ठेवण्यासाठी चीन भारताच्या शेजारील देशांशी जवळीक साधून भारताच्या प्रभावापासून त्यांना वेगळे करण्याचा प्रयत्न नेहमीच केल्याचे दिसत आहे .आंतरराष्ट्रीय राजकारणात भारताला दूर ठेवण्यासाठी चीन नेहमीच प्रयत्न करत असतो .त्यामुळे भारताने चीनशी संबंध ठेवताना राजनीतिक मुत्सद्देगिरी दाखवण्याची गरज आहे.

संदर्भ सूची :-

- 1) भोसले शांताराम ,भारताचे परराष्ट्र धोरण ,विद्या प्रकाशन ,नागपूर .
- 2) पाटील वा. भा., २०१५, भारताचे परराष्ट्रीय धोरण, प्रशांत पब्लिकेशन, जळगाव
- 3) www-http@@hi-m-Wikipedia-org-
- 4) www-essaysinhindi-com